Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय

तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

> जीव अजीव ओलख्या विनां,
> मिटें नहीं मन मन रो भर्म।
> समकत आयां विण जीव नें,
> रुके नहीं आवता कर्म।।
>
> जीव-अजीव की पहचान हुए बिना मन का भ्रम नहीं मिटता। सम्यकत्व आए बिना जीव के आने वाले कर्म नहीं रुकते हैं।
>
> –आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली ● वर्ष 27 ● अंक 24 ● 16 मार्च - 22 मार्च 2026 | प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 14-03-2026 ● पेज 12 | ₹ 10 रुपये

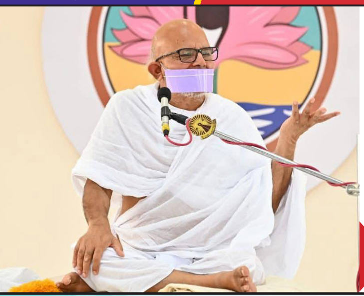

संयमित और सारपूर्ण बोलने का प्रयास रहे: आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

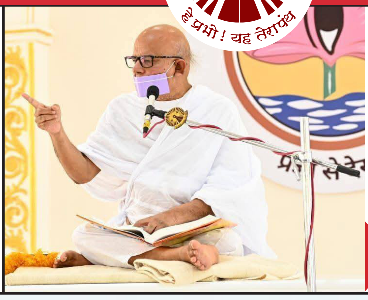

निष्ठुरता से बचने का प्रयास रहना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 10

Address Here

प्रायश्चित्तदाता के पास करें गलती का निवेदन : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
09 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी योगक्षेम वर्ष के अन्तर्गत निर्धारित विषय 'स्पष्ट भाषिता' पर आगम आधारित अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि मनुष्य की जीवन रूपी चादर उज्ज्वल भी रह सकती है और इसमें कहीं छोटे-मोटे धब्बे भी लग सकते हैं। व्यक्ति जागरूकता पूर्ण जीवन भी जी सकता है तो कहीं-कहीं प्रमाद भी हो सकता है।

साधु भी मनुष्य है और प्रायः छठे गुणस्थान प्रमत्त संयत गुणस्थान में रहता है। इस छद्मस्थता की स्थिति में भूल अथवा प्रमाद होना असंभव नहीं है। अतः कभी गलती हो जाए तो गलती होने के बाद स्पष्ट भाषित हो और प्रामाणिक व्यवहार होना चाहिए। कई बार मोहनीय कर्म के प्रभाव अथवा और किसी कारण से गलती होने पर भी उसको स्वीकार करने का साहस व्यक्ति नहीं कर पाता और परिणामस्वरूप वह मृषावाद का अवलंबन भी ले लेता है।

शास्त्रकार ने स्पष्टभाषिता के संदर्भ में बताया है कि कदाचित कोई अनाचरणीय कार्य साधु अथवा गृहस्थ से हो जाए तो उत्तम बात यह है कि किसी के बिना पूछे भी अपने अनुशास्ता अथवा प्रायश्चित्तदाता के पास गलती का निवेदन कर उससे शुद्ध होने की प्रार्थना करनी चाहिए और प्रायश्चित ग्रहण करना चाहिए। यदि ऐसा न हो तो अनुशास्ता को गलती के विषय में पूछने पर प्रामाणिक व्यवहार रखते हुए स्पष्ट भाषिता रखनी चाहिए और अपनी भूल को स्वीकार करना चाहिए। यदि भूल न की हो तो इस प्रकार का निवेदन कर देना चाहिए।

जिन्दगी में गलती हो सकती है परन्तु गलती होने के बाद उसका परिष्कार करने का संकल्प करना चाहिए और यह भावना रखें कि भविष्य में उस गलती की पुनरावृत्ति न हो। अनुशास्ताओं और संगठनों को भी किसी से गलती हो जाने पर अंतिम निर्णय लेने में अधीरता नहीं दिखानी चाहिए। जैसे सर्जरी से पहले दवाई देकर बीमारी ठीक करने का प्रयास किया जाता है उसी प्रकार भूल करने वाले को भी भूल सुधार करने का अवसर प्रदान करना चाहिए।

परम पूज्य गुरुदेव ने 'आलोचना' के महत्त्व को समझाते हुए कहा कि जिस प्रकार एक बच्चा अपने माता-पिता के सामने सरलता से अपनी बात कह देता है वैसी ही सरलता आलोचना में होनी चाहिए। (शेष पेज 9 पर)

'वीतराग कल्प' मघवागणी जैसी समता का लक्ष्य रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
08 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर धर्मसंघ के ग्यारहवें और वर्तमान अधिशास्ता, महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'सुधर्मा सभा' में अपनी पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि वीतराग व्यक्ति कर्म क्षय करता है। मोहनीय कर्म का संपूर्णतया क्षय हो जाने पर साधु क्षीणमोह वीतराग बन जाता है। बारहवें गुणस्थान की संपन्नता पर तेरहवें गुणस्थान के पहले समय में वीतराग साधु ज्ञानावरणीय कर्म का पूर्णतया क्षय कर देता है, दर्शन को आवृत्त करने वाले कर्म का भी क्षय कर देता है और फिर अन्तराय कर्म का भी नाश कर देता है। इस प्रकार पहले मोहनीय कर्म और फिर शेष तीन कर्म ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय का नाश तेरहवें गुणस्थान में हो जाता है।

आज के विषय 'वीतराग कल्प मघवा' के संदर्भ में गुरुदेव ने कहा कि आज चैत्र कृष्णा पंचमी है। हमारे धर्म संघ के पंचम आचार्य 'वीतराग कल्प' मघवागणी का आज महाप्रयाण दिवस है। वि.सं. 1949 चैत्र कृष्णा पंचमी को सरदारशहर में जम्मड़ परिवार की हवेली में मघवागणी ने अंतिम श्वास लिया था। लगभग बावन वर्षों का उनका जीवन काल आज के दिन संपन्न हुआ था। वे बाल्यावस्था में लाडनूं में दीक्षित हुए और उन्हें जयाचार्य प्रवर जैसे प्रज्ञा पुरुष के सान्निध्य में रहने का अवसर मिला। मघवागणी ने जयाचार्य के युवाचार्य रहते हुए आगम कार्यों में बहुत सहयोग किया। इतने सक्षम युवाचार्य के सहयोग के कारण ही जयाचार्य भगवती जोड़ जैसे विशाल ग्रंथ और अन्य ग्रंथों की रचना में अपना समय नियोजित कर सके और कार्य की संपन्नता की। मघवागणी का स्वभाव बहुत ही शांत व कोमल थे। वे अजात शत्रु थे। एक प्रसंग में अपने गुरु जयाचार्य की डांट और उपालंभ को युवाचार्य जैसे महत्वपूर्ण पद पर होते हुए भी भरी सभा में अत्यंत समता और विनय भाव से सहन किया। (शेष पेज 9 पर)

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिला मण्डल को दिया विशेष संदेश

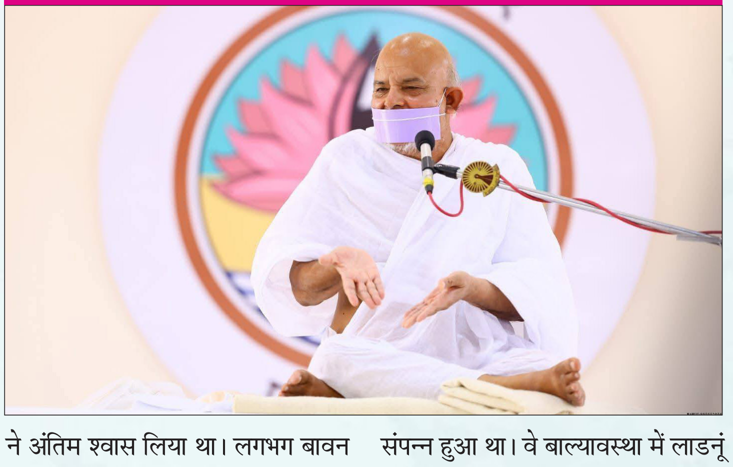

साधु दिनचर्या में जनोपकार, संघोपकार और आत्मोपकार का रहे लक्ष्य : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
07 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, शांतिदूत, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में लाडनूं की धरा पर योगक्षेम वर्ष के कार्यक्रम गतिमान है। कार्यक्रम का शुभारंभ पूज्य गुरुदेव के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। तदुपरान्त युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन संबोध करते हुए फरमाया कि साधु जीवन में स्वाध्याय का बहुत महत्त्व है और ध्यान का निर्देश भी हमें आगम वाङ्मय में प्राप्त होता है। साधु का जीवन सम्यक्त्व संवर और सर्व विरति संवर से संपन्न होता है। अप्रमाद संवर भी हो सकता है अर्थात् साधु का जीवन संवरमय होता है। जहां जहां साधुत्व है वहां-वहां संवर होगा ही और जहां संपूर्ण रूप में विरति संवर है वहां अवश्य साधुत्व होगा। अतः संवर के बिना साधुत्व नहीं हो सकता।

संवर और निर्जरा, इन दोनों तत्त्वों का अपना-अपना महत्त्व है, परन्तु संवर ज्यादा गरिमा वाला और महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। कोई व्यक्ति यदि तपस्या नहीं भी करे परन्तु यदि वह संवर की साधना करता है तो मुक्ति अवश्य ही होगी। कोरी तपस्या से मुक्ति हो ही जाए यह नियम नहीं है। अभव्य जीव की भी तपस्या, निर्जरा हो सकती है पर उसकी मुक्ति नहीं हो सकती। इसीलिए संवर को मोक्ष का कारण कहा गया है। यदि संवर की साधना संपुष्ट है तो कर्मों का झड़ना अवश्य होगा।

साधु का जीवन संवर मय होता है साथ ही शुभ योग से निर्जरा भी होती है। साधु की दैनिक चर्या का एक ऐसा मॉडल होना चाहिए जो साधु की दिनचर्या के लिए दिशा निर्देश प्रदान कर सके। मॉडल ऐसा हो जिसमें जनोपकार, संघोपकार और आत्मोपकार का यथासंभव हो सके। यद्यपि हमारे संघ में 75 के लिए 'सुप्रणिधान साधना' का एक प्रारूप तैयार किया गया है, जिसमें वे इच्छा होने पर अग्रणी का दायित्व छोड़कर खान-पान और जनसंपर्क को सीमित कर अपनी प्रकृष्ट साधना, स्वाध्याय और कषाय मुक्ति में अधिक समय लगा सकें। इस संदर्भ में पूज्य प्रवर ने सुप्रणिधान साधना की धाराओं की संक्षिप्त जानकारी प्रदान की।

आचार्य प्रवर ने आज के निर्धारित विषय 'अकेले ध्यान करो' के संदर्भ में कहा कि आगम में कहा गया है कि अकेले ध्यान करो। ध्यान अकेले किया जा सकता है परन्तु स्वाध्याय में कई बार दूसरे की आवश्यकता पड़ सकती है। जैसे कोई पढ़ाने वाला भी हो और पढ़ने वाला भी होना चाहिए। कभी समूह रूप में भी स्वाध्याय किया जा सकता है। परन्तु ध्यान तो अकेले ही किया जाता है। शरीर को स्थिर करना, चित्त को एकाग्रचित करना या निर्विचारता में जाना यह व्यक्ति अकेले ही बैठकर कर सकता है। कभी रात को नींद टूट जाए तो दो-तीन बजे उठकर कायोत्सर्ग, ध्यान किया जा सकता है, जप भी किया जा सकता है।

प्रवचन के पश्चात् पूज्य प्रवर ने चारित्रात्माओं की जिज्ञासाएं सुनकर उनका समाधान प्रदान किया।

संयमित और सारपूर्ण बोलने का प्रयास रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
05 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'बहुत मत बोलो' विषय पर आगम आधारित पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि विकसित भाषा लब्धि का होना प्रगति की पहचान है और भाषा का उपयोग हमारे व्यवहार का एक सक्षम आधार है। जो व्यक्ति सूक्ष्मता और निपुणता से सुनता है, वह श्रोता कभी एक वक्ता भी बन सकता है।

एक व्यक्ति के बैठने की मुद्रा, कंठ की आवाज, हाव-भाव, आदि बाह्य चीजें प्रवचन का 'शरीर' है जबकि वक्ता का ज्ञान, अध्ययन, और उसका अनुभव उस प्रवचन की 'आत्मा' या प्राण तत्त्व होते हैं।

क्षेत्रों में विचरण के दौरान साधु-साध्वियों में जिसकी भी व्याख्यान देने की ड्यूटी हो, उसे पूर्व तैयारी करनी चाहिए।

समयबद्धता का ध्यान रखना चाहिए। श्रोता ध्यान से सुनें या ना सुनें, यदि वक्ता 'अनुग्रह बुद्धि' से बोलता है, तो उसका स्वयं का हित और आत्मविकास अवश्य होता है। परम पूज्य आचार्य प्रवर ने प्रेरणा देते हुए कहा कि अणुव्रत, नैतिकता और सद्भावना का संदेश जेल, विद्यालयों, विद्या संस्थाओं और बाजार के चौराहों तक भी पहुंचना चाहिए।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि बात सारगर्भित होनी चाहिए, बात को अनावश्यक लंबा करना और उसमें सार न होना ये वाणी के दो दोष हैं। इसके विपरीत संयमित बोलना और सारपूर्ण बोलना वाणी के गुण होते हैं। वाचालता व्यक्ति को लघु बनाने वाली हो सकती है जबकि मौनशीलता उन्नति की ओर ले जाने वाली होती है। अतः व्यक्ति को हमेशा सोच-समझकर और तौलकर ही बोलना चाहिए। मितभाषी होना सच्चाई की साधना में भी सहयोगी बनता है।

वाणी संयम व्यवहार प्रशिक्षण का एक बहुत अच्छा सूक्त है, जिसकी हम सभी को अपने जीवन में आराधना करनी चाहिए।

मंगल प्रवचन के उपरांत पूज्य गुरुदेव ने साधु-साध्वियों, समणियों से जिज्ञासा आमंत्रित की और उनका समाधान प्रदान किया।

तदुपरांत जैन विश्व भारती द्वारा प्रज्ञा पुरस्कार का आयोजन हुआ जिसके अंतर्गत अभय दुगड़ (बेंगलुरु-जयपुर) को यह पुरस्कार प्रदान किया। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़, मुख्य न्यासी जयंतीलाल सुराणा, जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय के कुलपति बच्छराज दुगड़, योगक्षेम प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रमोद बैद ने यह पुरस्कार अभय दुगड़ को प्रदान किया। राजेंद्र खटेड़ ने परिचय प्रदान किया।

विराट NGO MEET में हुआ गहन मंथन

ठाणे।

नारी चेतना के उन्नायक आचार्य श्री महाश्रमण जी की प्रबुद्ध सुशिष्या साध्वी निर्वाण श्रीजी ठाणा-6 के पावन सानिध्य में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ।

समारोह में उपस्थित NGO और विशाल महिला समाज को संबोधित करते हुए विदुषी साध्वी निर्वाण श्री जी ने कहा - सुदूर आगम काल से ही भारतीय समाज में नारी का गरिमापूर्ण स्थान रहा है। नारी अपने विवेक चक्षुओं को खोलें व समाज तथा परिवार में घुसने वाली विकृतियों से बच सके। औपचारिक शिक्षा के साथ व्यावहारिक शिक्षा से स्वयं को सुशिक्षित कर सके, यही काम्य है। प्रबुद्ध साध्वी डॉ. योगक्षेम प्रभाजी ने अपने प्रखर वक्तव्य में महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा - स्वाभिमान और आत्मसम्मान ये दो शब्द बहुत महत्वपूर्ण है। अपना सम्मान कैसे सुरक्षित करें यह प्रत्येक महिला के लिए माननीय है स्वयं सम्मान पाए और दूसरों को भी सम्मान दें। अभातेममं की राष्ट्रीय महामंत्री रचना हिरण ने अपने विशेष वक्तव्य में महिलाओं में प्रेरणा भरते हुए अभातेममं की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। साध्वी योगक्षेम प्रभाजी, साध्वी लावण्या प्रभाजी, साध्वी कुंदनयशा जी, साध्वी मुदित प्रभाजी व साध्वी मधुर प्रभाजी ने 'अब अंतर तेज जगाओ' गीत से नया शमा बांधा। तेममं ठाणे की युवति बहनों ने सुंदर लघुनाटिका प्रस्तुत की, जिसका संयोजन मंत्री खुशबू पामेचा ने किया। ठाणे की नगरसेविका मृणाल पेंडसे ने सभी NGO को राजनीति में आने का आहवान किया। NGO Meet में उपस्थित करीब 18 संस्थाओं ने पैनल डिस्कशन में शानदार चर्चा की जिसका संचालन प्रचार प्रसार मंत्री रंजना बाफना ने किया। अभातेममं की पूर्व महामंत्री तरुणा बोहरा में अपने सारपूर्ण वक्तव्य में नारी शक्ति को उत्साहित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रेरणा गीत से हुआ जिसकी स्थानीय मंडल की बहनों ने सुंदर प्रस्तुति दी। तेममं अध्यक्ष संगीता चंडालिया ने समागत अतिथियों का स्वागत करते हुए साध्वी श्री के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

धन्यवाद ज्ञापन मंत्री खुशबू पामेचा ने किया। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर मुनि जयेश कुमार जी की संसारपक्षिय नानी पवन देवी स्व. अमरचंद गादिया को प्रेरणा सम्मान दिया गया, जिसे अभातेममं एवं स्थानीय मंडल की बहनों ने उप किया। सम्मान-पत्र का का वचन तेमम ठाणे की निर्वतमान अध्यक्ष मीनाक्षी श्रीश्रीमाल ने किया। अणुव्रत समिति मुंबई अध्यक्ष रमेश सोनी व TPF ठाणे अध्यक्ष अविनाशी गोगड़ ने कार्यक्रम की शुभ शुभकामनाएं दी । तेरापंथ सभा के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। डॉ. श्रीमती लता जी जैन ने महिलाओं को आरोग्य अवेयरनेस के टिप्स बताएं। कार्यक्रम पूर्ण भव्यता के साथ समायोजित हुआ।

अभातेयुप के सहमंत्री अंकुर लुनिया, अभातेममं से समृद्धि जी बोकाडिया व रेखाजी सियाल तथा वर्धमान स्थानकवासी महिला मंडल आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन कार्यसमिति सदस्य भारती सिंघवी ने किया ।

होली पर सिद्ध मंत्रों का अनुष्ठान

बंगाईगाँव (दक्षिण)।

तेरापंथ धर्म संघ के एकादशम अधिशास्ता महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी के विद्वान् सुशिष्य मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' एवं सहवर्ती मुनि विकास कुमार जी के पावन सान्निध्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बंगाईगांव दक्षिण के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल भवन में होली चातुर्मास का कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि श्री के महामंत्रोच्चार से हुआ। तत्पश्चात मुनि श्री ने होली चातुर्मास सिद्ध मंत्रो के साथ सामूहिक श्रावक-श्राविकाओं को जप अनुष्ठान बड़े रोचक ढंग से करवाया। मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ने अपने मंगल पाथेय में फरमाया कि भारतीय संस्कृति में होली केवल रंगो का त्योहार नही बल्कि यह आत्मा के परमात्मा से मिलन और अहंकार के विसर्जन का एक महान अनुष्ठान है। यह पर्व सदैव आत्म- शुद्धि और सामाजिक समरसत्ता को सुदृढ़ करने का एक पावन अवसर है। इतिहास गवाह है कि होली चातुर्मास का आध्यात्मिक और दार्शनिक महत्व अत्यंत गहरा है। मुनिश्री ने जैन तेरापंथ धर्म संघ में होली चातुर्मास का विशेष महत्व बताया है। यह त्योहार सभी श्रावक समाज में एकता के रंग की और गहराता है, यह पावन पर्व आनंद भरा उत्सव है और इसे मनाने से नए उत्साह का संचार होता है। मुनिश्री ने कहा कि होली मेल मिलाप के भाव के साथ पारस्परिकता का भी संदेश देता है। तेरापंथी सभा बंगाईगांव दक्षिण के उपाध्यक्ष हनुमानमल नाहटा ने स्वागत भाषण में होली की शुभ कामना दी। तेरापंथ महिला मंडल बंगाईगांव दक्षिण की बहनों द्वारा सामूहिक लाल परिधान में रंगों का त्यौहार होली पर भावपूर्ण गीतिका की प्रस्तुति दी। मुनि विकास कुमार जी ने 'होली आयी रे खुशियां री भर-भर होली ल्यायी रे' भावपूर्ण गीतिका की प्रस्तुति देकर उपस्थित श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा नाटक की प्रस्तुति हुई । जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के कार्यकारिणी सदस्य प्रकाश बैद, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की कार्यकारिणी सदस्य सोनिका पारख ने होली पर शुभकामना देते हुए अपने विचार व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल व सफल संचालन डोली नाहटा व आभार ज्ञापन जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के असम आंचलिक प्रभारी सुशील भंसाली ने किया।

'तेरापंथ मेरापंथ' कार्यशाला का सफल समायोजन

उल्हासनगर।

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी निर्वाणश्रीजी आदि थाणा-६ के पावन सान्निध्य में उल्लासनगर में 'तेरापंथ मेरापंथ' कार्यशाला का सफल समायोजन हुआ। जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा के निर्देशन में समायोजित इस कार्यशाला को संबोधित करते हुए विदुषी साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी ने कहा- आचार्य भिक्षु के दर्शन को स्वयं गहराई से समझे और आने वाली पीढ़ी को भी समझाएं।

'हे प्रभों! यह तेरापंथ' केवल एक उद्घोष नहीं है, इसके हार्द को समझना जरूरी है। आचार्य भिक्षु के दर्शन को पढ़ें ,उसे भीतर में ले जाने का प्रयास करें। प्रबुद्ध साध्वी डा.योगक्षेमप्रभाजी ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा- जैन धर्म शासन के नभ में तेरापंथ का उदय एक तेजस्वी सूर्य के उदय की भांति था। आचार्य भिक्षु ने आचार, विचार, और व्यवहार की त्रिपदी के आधार पर एक नई धर्मक्रांति की। साध्वी लावण्यप्रभाजी , साध्वी कुंदनयशाजी, साध्वी मुदितप्रभा, साध्वी मधुरप्रभाजी ने समवेत स्वरों में मधुर गीत प्रस्तुत किया प्रशिक्षक रतन सियाल(प्रवक्ता उपासक) ने तेरापंथ की दान,दया ,मूर्तिपूजा आदि सिद्धांतों का विशेष प्रशिक्षण दिया। उन्होंने तेरापंथ के मुलभूत सिद्धांतों के संदर्भ में आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व की झांकी प्रस्तुत की। कार्यशाला का शुभारंभ उल्हासनगर महिला मंडल के मंगल संगान से हुआ। उल्हासनगर क्षेत्र के प्रभारी सुरेश वेद ने प्रासंगिक अभिव्यक्ति दी । स्थानीय तेरापंथ सभा के उत्साही अध्यक्ष जीतुभाई ने समागत अतिथियों का स्वागत किया। वंदना जैन ने अपनी खुशी प्रकट करते हुए सभा परिवार को बधाई दी।

भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

गांधीनगर, बेंगलुरु।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, बेंगलुरु द्वारा 'भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला' का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागिता कर भिक्षु दर्शन के सिद्धांतों का गहन अध्ययन किया। कार्यक्रम में उपासिका पुष्पा गन्ना ने भिक्षु दर्शन विषय की सुंदर गणना प्रस्तुत करते हुए उपस्थित जनों को विषय की गहराई से परिचित कराया। डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी ने भिक्षु दर्शन के सिद्धांतों एवं उसके व्यावहारिक पक्ष पर अपने विचार रखते हुए बताया कि आचार्य भिक्षु के दर्शन जीवन को संयम, अनुशासन और आत्मविकास की दिशा प्रदान करते हैं।

कार्यशाला के दौरान मुनिश्री ने उपस्थित जिज्ञासुओं के विभिन्न प्रश्नों का समाधान कर विषय को और अधिक स्पष्ट किया। वहीं नचिकेता मुनि आदित्य कुमार जी स्वामी ने गीत का संगान कराते हुए कार्यक्रम को आध्यात्मिक गरिमा प्रदान की।

इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के संगठन मंत्री रोहित कोठारी की भी उपस्थिति रही।

तेरापंथ युवक परिषद हनुमंतनगर अध्यक्ष स्वरूप चोपड़ा की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में परिषद के अध्यक्ष प्रसन्न धोका ने वक्ताओं एवं उपस्थित श्रद्धालुओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम धर्मज्ञान को गहराई से समझने और जीवन में उतारने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

पंच परमेष्ठी गीतिकाओं का कंठस्थ अभियान

लाडनूं।

आचार्य श्री महाश्रमणजी द्वारा नव वर्ष के उपलक्ष्य में 'पंच परमेष्ठी' गीतिकाओं को कंठस्थ करने हेतु जो दिशानिर्देश एवं मार्गदर्शन प्रदान किया गया, उसे क्रियान्वित करने के उद्देश्य से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल ने इन गीतिकाओं को कंठस्थ कराने का संकल्प ग्रहण किया। इस प्रयास में महिला मंडल सहित युवती विभाग एवं कन्या मंडल की सहभागिता अत्यंत प्रेरणादायी रही। सभी बहनों और कन्याओं ने श्रद्धा, उत्साह एवं आत्मविश्वास के साथ भाग लेकर प्रतियोगिता को गरिमामय स्वरूप प्रदान किया। 15 फरवरी तक कुल 312 प्रतिभागियों ने इस अभियान में सहभागिता दर्ज कराई। उनकी सक्रिय प्रस्तुतिने इस उपक्रम को समग्र रूप से यादगार बना दिया तथा पूज्य प्रवर्तक की प्राचीन गीतिकाओं के पुनरुद्धार के स्वरूप को साकार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
16 मार्च - 22 मार्च 2026

संक्षिप्त खबर

ज्ञानशाला का वार्षिक उत्सव हर्षोल्लास से संपन्न

नोखा। शासन गौरव साध्वी श्री राजीमती जी के पावन सान्निध्य में ज्ञानशाला का वार्षिक उत्सव अत्यंत हर्षोल्लास एवं आध्यात्मिक वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानशाला बच्चों द्वारा मंगलाचरण के साथ हुई, जिसके पश्चात ज्ञानशाला के बच्चों ने विविध सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रस्तुतियाँ देकर सभी का मन मोह लिया। बच्चों द्वारा प्रस्तुत नाटिका, कविता, और धार्मिक गीतीका ने कार्यक्रम को अत्यंत प्रेरणादायक बना दिया। ज्ञानशाला के प्रशिक्षकों द्वारा भी सुंदर गीतीका प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर शिशु संस्कार बोध परीक्षा – 2025 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया गया। ज्ञानशाला के श्रेष्ठ ज्ञानार्थी के रूप में विवेक भूरा और आयुष मालू को विशेष सम्मान प्रदान किया गया। बच्चों में उत्साह और प्रेरणा बनाए रखने के लिए सभी ज्ञानशाला विद्यार्थियों को भी पुरस्कृत किया गया।

मेघा ब्लड टेस्ट कैम्प का आयोजन

अमराईवाड़ी। आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेन्टर, अमराईवाड़ी मेघा ब्लड टेस्ट केम्प का आयोजन ATDC, अमराईवाड़ी पर किया गया। सुबह से ही पूरी टीम इस केम्प को सफल बनाने में अपना पूरा पूरा योगदान दे रही थी। कैम्प में बेजीक बॉडी प्रोफाइल,सुपर बॉडी प्रोफाइल एवम फुल बॉडी प्रोफाइल के तीन पैकेज रखे गए। कैम्प में 28 सदस्यों ने लाभ लिया। कैम्प को सफल बनाने में ATDC संयोजक मुकेश सिंघवी, सहसंयोजक हितेश चपलोत, परामर्शक कैलाश बाफना तथा पूरी ATDC टीम का विशेष श्रम रहा।

मातृशक्तियों का सम्मान एवं विभिन्न एनजीओ से संवाद

चेंबूर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में चेंबूर महिला मंडल द्वारा तेरापंथ सभा भवन, चेंबूर में एक प्रेरणादायी एवं उत्साहवर्धक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मंडल की अध्यक्षा ममता कच्छारा द्वारा सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया गया। इस अवसर पर विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिनमें प्रमुख रूप से स्वयंसिद्धा सोसाइटी फॉर हैंडीकैप्ड, चेंबूर सुनीता नागरे, डॉ. योगिता शेंडगे, प्रेसिडेंट – रोटरी क्लब ऑफ बॉम्बे, सुरभी महिला सेवा सहकारी संस्था राजश्री पलांडे, चेंबूर महिला समाज वीणा माली इन सभी अतिथियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा को और बढ़ाया। सम्मान प्राप्त करने वाली विभूतियाँ में बदामबाई सिंघवी (साध्वी कुसुम प्रभा जी की माताश्री) मीना डागलिया (मुनि अनुशासन कुमार जी एवं मुनि मृदु कुमार जी की माताश्री) इन मातृशक्तियों का जीवन समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

गृहलक्ष्मी स्वाभिमान अभियान का आयोजन

इरोड। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में तेरापंथ महिला मंडल इरोड द्वारा प्रेरणा गीत से मंडल की बहनों ने कार्यक्रम की शुरुआत की, कार्यक्रम के प्रथम चरण में NGO से आई हुई बहन का सम्मान व उनका परिचय उनके NGO किस तरह महिला सशक्तिकरण ,महिला सुरक्षा और कन्याओं की शिक्षा के लिए काम कर रही है उसके बारे में बताया गया। प्रेरणा सम्मान के तहत मुनि हेम ऋषि जी व मुनि उपशम कुमार जी के संसार पक्षीय माता व धर्मपत्नी का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन समता जीरावला ने किया।सभी का धन्यवाद ज्ञापन मंत्री कविता सिंघी ने किया।

मंगल भावना समारोह आयोजित

बीकानेर/गंगाशहर।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गंगाशहर के तत्वावधान में शांतिनिकेतन सेवा केंद्र के प्रांगण में एक भव्य 'मंगलभावना समारोह' का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी श्री विशदप्रज्ञा जी एवं साध्वी श्री लब्धियशा जी द्वारा गंगाशहर सेवा केंद्र में सफलतापूर्वक संपन्न की गई 13 महीने की सेवा के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया।

सेवा केंद्रः बुजुर्ग साध्वियों का संबल गंगाशहर का शांतिनिकेतन सेवा केंद्र उन बुजुर्ग और रुग्ण साध्वियों का 'स्थिरवास' है, जिन्होंने अपना पूरा जीवन संयम और साधना में समर्पित कर दिया है।

आचार्य श्री महाश्रमण जी प्रतिवर्ष यहाँ इन साध्वियों की सेवा के लिए विशेष 'ग्रुप (साध्वी समूह) नियुक्त करते हैं। इसी कड़ी में साध्वी श्री विशदप्रज्ञा जी एवं साध्वी श्री लब्धियशा जी के समूह ने 13 महीनों तक अपनी निष्काम सेवाएँ दीं। समारोह को संबोधित करते हुए साध्वी श्री विशदप्रज्ञा जी ने सेवा के महत्व पर प्रकाश डाला।

अखूट ज्ञान का भंडारः उन्होंने कहा कि बुजुर्ग साध्वियां धर्म संघ की अमूल्य धरोहर हैं। इनकी सेवा से न केवल कर्मो की निर्जरा होती है, बल्कि ज्ञान और वैराग्य में भी वृद्धि होती है। साधना ओर संयम की ताकत होती है। इनकी सेवा करने से कर्म निर्जरा के साथ ज्ञान वैराग्य की वृद्धि होती है।

साध्वी जी ने कहा कि 'माईतों' (बुजुर्ग साध्वियों) की सेवा करना साक्षात् भगवान महावीर की वाणी का अनुसरण करना है, जिससे आत्मसंतुष्टि और निश्चिंतता प्राप्त होती है।

गंगाशहर समाज की अद्वितीय सेवा भावना साध्वी श्री लब्धियशा जी ने गंगाशहर प्रवास के दौरान मिले वात्सल्य और स्नेह का आभार व्यक्त किया। गंगाशहर की तेरापंथी सभा अद्वितीय है। श्रावक जागरूक है। सभी में सेवा भावना के भाव है। कार्यक्रम में साध्वी मंदारप्रभा जी और विधिप्रभा जी ने रोचक संवाद प्रस्तुत किया, वहीं महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर गीतिका के माध्यम से अपनी मंगलभावनाएँ व्यक्त कीं।

कार्यक्रम में साध्वी कंचनबाला जी ने कहा कि इन दोनों ग्रुप ने सेवा के द्वारा मोक्ष, मुक्ति का रिजर्वेशन करवा लिया है। आज आप सभी का असली, सच्चा स्वागत है। अग्रणी श्रावकों की उपस्थिति समारोह में साध्वी प्रभाश्री जी, साध्वी मल्लिकाश्री जी, साध्वी स्वस्थप्रभा जी, साध्वी कौशलप्रभा जी आदि साध्वियों ने अपने विचार व्यक्त किये। सहित अनेक साध्वियों ने अपने विचार रखे। श्रावक समाज की ओर से कार्यक्रम में जैन लूणकरण छाजेड़, नवरतन बोथरा, आदि ने अपने विचारों से गीतिकाओ से भाव प्रकट किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथी सभा गंगाशहर के मंत्री जतनलाल संचेती ने किया।

संत वह जो शीलवान और विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य न खोए

चंडीगढ।

संत उस आत्मज्ञानी, सत्य आचरण करने वाले और सांसारिक मोह-माया से विरक्त आत्मा को कहते हैं, जिसके जीवन में सहनशीलता, करुणा और ईश्वर के प्रति निश्चल भक्ति हो। वे संप्रदाय-मुक्त होकर सभी में ईश्वर को देखते हैं, काम-क्रोध-लोभ से मुक्त होते हैं और सादगीपूर्ण जीवन जीते हुए समाज को सही मार्ग दिखाते हैं। ऐसे सभी सर्वगुणो को साक्षात मै आज अपनी आंखो से मनीषीसंत से मिलकर देख रहा हूं। ये शब्द पंचकूला से मुनि मनक कुमार जी मनीषीसंत मुनि विनयकुमारजी आलोक से मुलाकात दौरान कहे।

इस दौरान मनीषीसंत ने कहा संत वह है जो शीलवान हो और विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य न खोए। धन, यश और मोह-माया से दूर रहने वाले। संक्षेप में, संत वह है जो ज्ञान और भक्ति के रंग में रंगा हुआ हो और जिसका हृदय चंद्रमा की तरह शीतल हो। सावधानी भविष्य के प्रति सबसे बड़ी सावधानी तो यह रखना है कि हमारा भविष्य भूत और वर्तमान से हमेशा ऊंचा ग्राफ़ लिए हो। यानी आने वाला कल जो कि कुछ समय बाद हमारा आज बन जाएगा, इसके ग्राफ़ में हमेशा ऊंचाई हो।

सर्व धर्म सद्भावना महामंगल मैत्री समारोह का आयोजन

चेम्बूर, मुंबई।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि अनंत कुमार जी एवं मुनि जैनमकुमार जी भिक्कू संघाज यूनाइटेड बुद्धिस्ट मिशन के पूज्य डॉक्टर भदंत राहुल बोधि जी के 75 में अमृत महोत्सव जन्मदिन के उपलक्ष में आयोजित सर्वधर्म सद्भावना समारोह में तेरापंथ धर्म संघ का प्रतिनिधित्व किया।

मुनि अनंत कुमार जी ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि भारतीय संस्कृति में मुख्यतः दो धाराएं है । वैदिक संस्कृति एवं श्रवण संस्कृति श्रमण संस्कृति के अंतर्गत बौद्ध एवं जैन धर्म का समागम होता है ।भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध भी समकालीन थे। दोनों के जीवन सूत्र पढ़ते हैं तो समान से लगते हैं । महात्मा बुद्ध कहते थे अप्प दीवो भवःऔर भगवान महावीर का उपदेश था अप्पणा सच्च में सेज्जा।

मुनिश्री ने भदंत राहुल बोधि को इस समारोह के संबंध उनके साधना के प्रति अनुमोदन करते हुए कहा कि राहुल बोधि ने अपने गुरु के प्रति समर्पण किया। उन्होंने अपने जीवन में 8000 से अधिक प्रवचन किए हैं। अनेक देशों में मानवता का मिशन लेकर घूमे हैं।19 96 में कनाडा में भी महात्मा बुद्ध के अवशेष लेने के जाने वाली टीम में आपको बौद्ध धर्म की ओर से भेजा था। मुनिश्री ने कहा कि मुझे याद है। इस कार्यक्रम में क्रिश्चियन धर्म की ओर से फादर माइकल रोझारीयो,हिंदू धर्म की ओर से स्वामी सद्गुरु मंगेश दा, ब्रह्माकुमारी सखु दीदी, ब्रह्मा कुमारी प्रतिभा बहन ,स्वामी गुरुनाथ बालाजी ,स्वामी गोविंद गिरी महाराज एवं बौद्ध संप्रदाय से अरुणाचल से अनिरुद्धा, तेरापंथ समाज की ओर से ख्यालीलाल तातेड ,नरेंद्र तातेड, जीतू भाई भाभेरा, राजकुमार चपलोत, ताराचंद गन्ना , लक्ष्मण कोठारी, ललित लोढ़ा आदि भी उपस्थित थे। महाराष्ट्र सरकार के केबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढा की विशेष उपस्थिति थीं।इस कार्यक्रम की रूपरेखा में मुख्यतः भूमिका राजकुमार चपलोत की रही है।

भिक्षु दर्शन कार्यशाला का सफल आयोजन

ठाणे।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित एवं तेयुप ठाणे द्वारा आयोजित भिक्षु दर्शन कार्यशाला तेरापंथ माजीवाड़ा मे सफ़लता से समायोजित हुई। कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए आचार्य भिक्षु का दर्शन गहराई और ऊंचाई का समवय था उन्हें समझने के लिए चिंतन की एकाग्रता जरूरी है आचार्य भिक्षु ने मिश्र धर्म की अवधारणा को ही निराकृत कर दिया /बड़े जीवो की रक्षा के लिए छोटो की हिंसा को उन्होंने हिंसा ही माना उनके चिंतन का निष्कर्मः यही था कि हिंसा त्रिकाल में हिंसा ही मानी जायेगी।

कार्यशाला की मुख्य वक्ता साध्वी डॉ योगक्षेम प्रभाजी ने अपने प्रखर वक्तव्य में कहा-- आचार्य भिक्षु धर्म के महान व्यख्याकार थे उन्होंने धर्म की छोटी छोटी परिभाषाओ में गहन सत्य को गुम्फित कर दिया। उन्होंने असंयम को अधर्म कहा तो असंयमी के पोषण भी अधर्म की कोटि में लिया। साध्वी लावन्यप्रभाजी ने आचार्य भिक्षु के संगठन और साध्वी कुंदन यशाजी ने उनके अनुभवो की संक्षिप्त व्यख्या की। साध्वी योगक्षेम प्रभाजी आदि सभी साध्वियों ने जम्बुद्वीप के भरत क्षेत्र में" गीत की भावपूर्ण प्रस्तुति दी! कार्यक्रम की अध्यक्षता अभातेयुप के राष्ट्रीय सहमंत्री अंकुर लूणिया ने आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों की संक्षिप्त प्रस्तुति दी! उन्होंने अभातेयुप के आयामो की जानकारी दी। राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य निर्मल चंडालिया ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामन्त्र के संगान से हुआ। तेयुप ठाणे के सदस्यों ने विजय गीत का संगान किया श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन साध्वी मुदित प्रभाजी ने करवाया! तेयुप अध्यक्ष सुरेश श्रीश्रीमाल ने समस्त अतिथियो का स्वागत करते हुए साध्वी श्री के प्रति कृतज्ञता प्रकट की तेमम अध्यक्षा संगीता चंडालिया ने कार्यशाला के लिए शुभकामनाएं संप्रेषित की! धन्यवाद ज्ञापन तेयुप के मंत्री कल्पेश टोडरवाल ने किया। सहसंयोजक के रूप में उपाध्यक्ष भाविन भंसाली ने अपनी सेवा दी। तेयुप कोषाध्यक्ष महावीर नोलखा अणुव्रत सिमिति के उपाध्यक्ष मनोहर कच्छारा की उपस्थिति रही मंच संचालन दीपेश मोटावत ने किया।

संक्षिप्त खबर

NGO मीट एवं प्रेरणा सम्मान कार्यक्रम

इचलकरंजी। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित तेरापंथ महिला मंडल इचलकरंजी द्वारा NGO मीट एवं प्रेरणा सम्मान कार्यक्रम अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर स्थानीय स्तर पर तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। अध्यक्ष विजया बालड ने सभी को अपने भावों को अभिव्यक्त किया। एबीटीमएम के कन्यामंडल सहसंयोजिका जयश्री जोगड ने अपने व्यक्तित्व में तेरापंथ महिला मंडल कार्यक्षेत्र बारे में केवल आध्यात्मिक ही नहीं अपितु social समाज में भी अपनी भूमिका कैसे निभा रहे है ,नये नये projects के बारे में विस्तार से बताया। सीतादेवी अशोक वेद मेहता को प्रेरणा सम्मान पत्र से सम्मानित किया गया। टीएमएम के सचिव समता चोपड़ा ने कार्यक्रम का संचालन किया एवं सहमंत्री नीता छाजेड़ ने कार्यक्रम का आभार किया।

अणुव्रत काव्य धारा का हुआ आयोजन

चेन्नई। आचार्य तुलसी द्वारा अणुव्रत आंदोलन प्रवर्तन की 78वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में अणुव्रत समिति और जैन लेखक मंच, तमिलनाडु के संयुक्त तत्वावधान में काव्य धारा कार्यक्रम समायोजित हुआ। तीर्थंकर स्तुति से प्रारंभ कवि सम्मेलन में मंच अध्यक्ष एम. गौतमचंद बोहरा (सीए) ने अणुव्रत आंदोलन को मानव मात्र के लिए हितकारी बताया। अणुव्रत अध्यक्ष सुभद्रा लुणावत ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन को आगे बढ़ाने में लेखकों और कवियों का योगदान भी जुड़ा है। साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग ने 'देश, जाति, वर्ण, पंथ से ऊपर आदमी है, आदमी को आदमी का ध्यान होना चाहिए' छंद सुनाकर राजस्थानी गीत सुनाया। वरिष्ठ गीतकार नैनमल जैन, अमित मरडिया, केवल कोठारी, जयंतीलाल 'जागरुक', मनोहर 'महक' और सरिता सरगम ने अणुव्रत मूल्यों से अनुप्राणित रचनाओं का पाठ किया। काव्य गोष्ठी का संचालन शिल्पा बंब जैन ने किया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री कुशल बांठिया ने दिया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार निधि

पाणिग्रहण संस्कार

■ **सूरत।** भीम निवासी सूरत प्रवासी धर्मचंद मेहता की पौत्री व रमेश मेहता की सुपुत्री पायल मेहता का शुभ पाणिग्रहण संस्कार भीलवाड़ा निवासी मदनलाल डांगी का पौत्र व स्व दिनेश डांगी का पुत्र अंकुर डांगी के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकान्त खटेड, धर्मचंद सामसूखा, मनीष कुमार मालू, अशोक बापना विनीत सामसूखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **गंगाशहर।** निर्मल राखेचा के सुपुत्र अरिहन्त राखेचा का पाणिग्रहण संस्कार कन्हैया लाल दुगड़ की सुपुत्री रीना दुगड़ के साथ जैन संस्कार विधि से समता भवन, नई लाइन गंगाशहर में जैन संस्कारक 'युवक रत्न' राजेन्द्र कुमार सेठिया, देवेन्द्र डागा, विपिन बोथरा और विनीत बोथरा ने विवाह संस्कार का सारा मांगलिक आयोजन विधि विधान पूर्वक सानंद संपन्न करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान

■ **सूरत।** भुनासर निवासी सूरत प्रवासी अरिहंत शिल्पा जैन (स्थानकवासी) के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष मालू, अभय बोथरा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **उदयपुर।** स्व. हेमराज-कमलाबाई बरडिया के पुत्र हर्ष-रुचि बरडिया (चूरू-कोलकत्ता- सिडनी निवासी) के नवीन मकान का सिडनी में गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से ऑनलाइन माध्यम से करवाया गया। संस्कारक सुबोध दुगड़ एवं प्रशिक्षु संस्कारक भूपेश खिमेसरा द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से गृह प्रवेश कार्यक्रम सम्पादित करवाया गया।

■ **उदयपुर।** अनिल खिमेसरा के नवीन फ्लैट का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुबोध दुगड़ एवं प्रशिक्षु संस्कारक भूपेश खिमेसरा द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से गृह प्रवेश कार्यक्रम सम्पादित करवाया गया।

होली चातुर्मास महोत्सव उल्लास के साथ मनाया

कोचीन, केरल।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी श्री पावन प्रभा ठाणा -4, एवं साध्वी सिद्ध प्रभा जी ठाणा -4 के सान्निध्य में होली चातुर्मास महोत्सव अपूर्व उल्लास के साथ मनाया गया।

इस कार्यक्रम में कोच्चि , तिरूपुर, पालघाट, बैंगलोर आदि अनेक क्षेत्रों से उपस्थित जैन एवं जैनेतर समाज को पावन प्रवचन करते हुए साध्वी पावन प्रभा जी ने कहां कि आज प्रसन्नता हे कि कोच्चि की इस हरी भरी धरती पर हम हरा भरा त्यौहार मना रहे हे रंग में राग भी हे ओर आग भी है।

हमे मैत्री भाईचारे को बढ़ाना हे ओर अवगुणों को जलाना है ओर होलिका के भांति नेगेटिव को जलाना है और प्रहलाद के पवित्र भावों को आगे बढ़ाना है।

होली चातुर्मासिक पखी के विशेष महत्व को बताते हुए प्रतिक्रमण की विशेष प्रेरणा प्रदान सभा को संबोधित करते हुए साध्वी सिद्धप्रभा जी ने नमस्कार महामंत्र से संबधित अनेक प्रैक्टिकल छोटे छोटे प्रयोग बताए ओर प्रत्येक रंग के तार्किक दृष्टिकोण को समझाया ओर नमस्कार महामंत्र के वैशिष्ट्य का विस्तार किया।

महामंत्र के द्वारा अनेक शारीरिक , मानसिक एवं ज्योतिषिक संबंधी समस्याओं के समाधान बता कर सभी जनता को लाभान्वित किया।

ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा प्रतिक्रमण की प्रस्तुति उनकी प्रतिभा को दर्शा रही थी ,कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी आस्थाप्रभा जी द्वारा किया गया।

वॉकथॉन एवं प्रेक्षा ध्यान का सफल आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित, फिट युवा हिट युवा के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद पूर्वांचल कोलकाता संग तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम पूर्वांचल, उत्तर हावड़ा एवं कोलकाता जेनरल ने शारीरिक स्वास्थ्य को ध्यान रखते हुए डेकाथलन, सेक्टर 5 में प्रेक्षा फाउंडेशन कोलकाता के सहयोग से वॉकथॉन, प्रेक्षा ध्यान व जुंबा का कार्यक्रम आयोजित किया। नवकार मंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत मंत्री सिद्धार्थ दुधेड़िया एवं कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा की गई।

वॉकथॉन का उदघाटन जय सिंह डागा (अध्यक्ष - साल्टलेक सभा) तथा राकेश सिंघी (अध्यक्ष TPF पूर्वांचल कोलकाता) द्वारा किया गया।

पूर्वांचल सभा के मुख्य न्यासी बाबूलाल गंग एवं टीपीएफ के मुख्य न्यासी सुशील चोपड़ा ने जैसे ही हरी झंडी दिखाई, तकरीबन 400 लोगों ने उत्साह के साथ इसका लाभ उठाया। 3Km लंबे इस वाकाथोन में सभी ने एक साथ में चलते हुए हमारे आयाम फिट युवा हिट युवा के द्वारा स्वस्थ रहने की जागरूकता बढ़ाई।

इस कार्यक्रम में अजय भंसाली, (अध्यक्ष - कोलकाता सभा), अशोक पारख (अध्यक्ष - टॉलीगंज सभा), जय सिंह डागा (अध्यक्ष - साल्ट लेक सभा), प्रेम डागा (अध्यक्ष - साल्ट लेक महिला मंडल), कुसुम शेखानी (मंत्री - साल्ट लेक महिला मंडल), राकेश सिंघी(अध्यक्ष - TPF कोलकाता पूर्वांचल) आदि उपस्थित रहे।

संबोधि

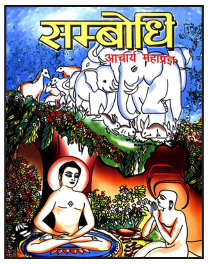

परिशिष्ट

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

स्वामी रामकृष्ण ने विवेकानंद से कहा-'मैंने वेदान्त आदि शास्त्र पढ़े नहीं, इसका मुझे खेद नहीं है, किन्तु मैं जानता हूं कि वेदांत का सार है-'ब्रह्म सत्य है और जगत मिथ्या।' उन्होंने कहा है- 'शास्त्र का सार श्रीगुरुमुख से जान लेना चाहिए। शास्त्रों का सार जान लेने के बाद पुस्तकें पढ़ने की क्या आवश्यकता ?' महावीर ने कहा है-'छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए' सुखी होने का मंत्र है-'राग को दूर करना और द्वेष का छेदन करना।' राग-द्वेष की ऊर्मियां ही संसार है। स्वाध्याय की साधना में संलग्न व्यक्ति अपने भीतर इन तरंगों को बहुत सूक्ष्मेक्षिकया देखता है और वृत्तियों के उद्गम स्थल पर ही इनका निवारण कर शांत और सुखी बनता है।

(5) ध्यान

तप और योग के समस्त अंगों में ध्यान प्राण है, जीवन है, आत्मा है। ध्यान के अभाव में समस्त अंग निर्जीव हैं। ध्यान ही उन्हें सजीव बनाता है। ध्यान सत्य के निकट ही नहीं अपितु सत्य की अनुभूति और प्रत्यक्षता को साधक के सामने प्रस्तुत करता है। यथार्थ धर्म ध्यान है। शास्त्रोक्त बातों की प्रत्यक्ष उपलब्धि उसके अभाव में असंभव है। धर्म विषयक विचार, भाषण तथा ग्रंथों का पारायण यथार्थ नहीं है, किन्तु यथार्थ की दिशा में प्रेरित करने के उपाय मात्र हैं। बुद्ध ने बड़ी महत्त्वपूर्ण बात अपने शिष्यों से कही-

'तुम्हेहि किच्च आतप्पं, अक्खातारो तथागता ।
पटिपन्ना पमोक्खन्ति, झाणिनो मारबन्धना ।।'

भिक्षुओ ! श्रम तो तुम्हें ही करना है। तथागत सिर्फ उपदेश देने वाले हैं। जो ध्यानी उस पथ पर आरूढ़ होते हैं, वे मार (शैतान) के भय से मुक्त होते हैं।

अब हम ध्यान के संबंध में ध्यान का महत्त्व क्या है? ध्यान क्या है? ध्यान का विषय क्या है? ध्याता, ध्येय आदि विषयों पर विचार करेंगे।

ध्यान का महत्त्व

स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा है- 'जितने मत हैं उतने मार्ग हैं, सभी उस मंजिल पर पहुंचते हैं।' ध्यान से विरक्त कोई धर्म नहीं है। सभी धर्मों में ध्यान की मुक्तकण्ठ से स्तवना की है। शरीर में जो महत्त्व मेरुदण्ड का है, धर्म में वही स्थान ध्यान का है। कोई भी योग का अभ्यास करे, ध्यान अनिवार्य है। ध्यान के बिना न नाद-श्रवण किया जा सकता है, न मंत्र साधना, न बिन्दु साधना और न आत्म-साधना हो सकती है। ध्यान को किसी भी तरह अस्वीकार नहीं किया जा सकता। जैन परम्परा के महान् साधक अर्हद् दगमाली ने कहा है-

'सीसं जहा सरीरस्स, जहा मूलं दुमस्स य।
सव्वस्स साधुधम्मस्स, तहा झाणं विधीयते ।।'

मनुष्य का सिर काट देने पर उसकी मृत्यु हो जाती है, वृक्ष के मूल को उखाड़ देने पर धराशायी हो जाता है, वैसे ही ध्यान को छोड़ देने पर धर्म निर्जीव हो जाता है। शरीर में जो स्थान मस्तिष्क का है, धर्म में वही स्थान ध्यान का है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

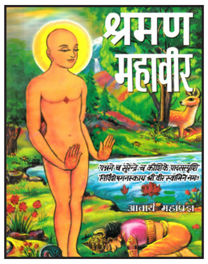

सतत जागरण

भगवान ने ध्यान के क्षणों में अनुभव किया कि आत्मा सूर्य की भांति प्रकाशमय है, चैतन्यमय है। उसमें न जीवन है और न मृत्यु। न जीवन की आकांक्षा है और न मृत्यु का भय। देह और प्राण का योग मिलता है, आत्मा देही के रूप में प्रकट हो जाती है, जीवित हो जाती है। देह और प्राण का सम्बन्ध टूटता है, आत्मा देह से छूट जाती है, मर जाती है।

आत्मा देह के होने पर भी रहती है और उसके छूट जाने पर भी रहती है। फिर जीवन की आकांक्षा और मृत्यु का भय क्यों होता है? भगवान ने इस रहस्य को देखा और बताया कि आत्मा में आकांक्षा नहीं है। उसकी विस्मृति ही आकांक्षा है। आत्मा में भय नहीं है। उसकी विस्मृति ही भय है। भगवान की यह ध्वनि आज भी प्रतिध्वनित हो रही है- 'सब्बओ पमत्तस्स भयं' प्रमत्त को सब ओर से भय है। 'सव्वओ अप्पमत्तस्स णत्थि भयं' 'अप्रमत्त को कहीं से भी भय नहीं है।''

एक बार भगवान ने 'आर्यों! आओ', कहकर गौतम और श्रमणों को आमंत्रित किया। सभी श्रमण भगवान के पास आए। भगवान् ने उनसे पूछा- 'आयुष्मान् श्रमणो! जीव किससे डरते हैं? गौतम बोले- भगवान! हम नहीं समझ पाए इस प्रश्न का आशय। भगवान को कष्ट न हो तो आप ही इसका आशय हमें समझाएं। हम सब जानने के उत्सुक हैं।'

'आर्यो! जीव दुःख से डरते हैं।'

'भन्ते! दुःख का कर्ता कौन है?'

'जीव।'

'भन्ते! दुःख का हेतु क्या है?'

'प्रमाद।'

भन्ते! दुःख का अन्त कौन करता है?

'जीव।'

'भन्ते!' दुःख के अन्त का हेतु क्या है?

'अप्रमाद।'

इस प्रसंग में भगवान ने एक गम्भीर सत्य का उद्घाटन किया। भगवान कह रहे हैं कि भय और दुःख शाश्वत नहीं हैं। वे मनुष्य द्वारा कृत हैं। प्रमाद का क्षण ही भय की अनुभूति का क्षण है और प्रमाद का क्षण ही दुःख की अनुभूति का क्षण है। अप्रमत्त मनुष्य को न भय की अनुभूति होती है और न दुःख की।

कामदेव अपने उपासना-गृह में शील और ध्यान की आराधना कर रहा था। पूर्वरात्रि का समय था। उसके सामने अकस्मात् पिशाच की डरावनी आकृति उपस्थित हो गई। वह कर्कश ध्वनि में बोली- 'कामदेव! इस शील और ध्यान के पाखण्ड को छोड़ दो। यदि नहीं छोड़ोगे तो तलवार से तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा।' कामदेव अप्रमाद के क्षण का अनुभव कर रहा था। उसके मन में न भय आया, न कम्पन और न दुःख।

पिशाच को अपने प्रयत्न की व्यर्थता का अनुभव हुआ। वह खिसिया गया। उसने विशाल हाथी का रूप बना कामदेव को फिर विचलित करने की चेष्टा की। उसे गेंद की भांति आकाश में उछाला। नीचे गिरने पर पैरों से रौंदा। पर उसका ध्यान भंग नहीं कर सका।

पिशाच अब पूरा सठिया गया। उसने भयंकर सर्प का रूप धारण किया। कामदेव के शरीर को डंक मार-मारकर बींध डाला। पर उसे भयभीत नहीं कर सका। आखिर वह अपने मौलिक देवरूप में उपस्थित हो वहां से चला गया। प्रमाद अप्रमाद से पराजित हो गया।

भगवान महावीर चंपा में आए। कामदेव भगवान् के पास आया। भगवान ने कहा- 'कामदेव! विगत रात्रि में तुमने धर्म-जागरिका की?'

'भन्ते ! की।'

'तुम्हें विचलित करने का प्रयत्न हुआ?'

'भन्ते ! हुआ।'

'बहुत अच्छा हुआ, तुम कसौटी पर खरे उतरे ।'

'भन्ते! यह आपकी धर्म-जागरिका का ही प्रभाव है।'

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री ऊमांजी (राजलदेसर) दीक्षा क्रमांक 257

साध्वीश्री बड़ी तपस्विनी थी। आपने उपवास से 20 दिन तक क्रमबद्ध तप किया तथा 2 चोले, 25 पंचोले, 1 अठाई, 1 बारह, 1 चौदह और एक बार 16 दिन का तप किया। एक बार धर्म चक्र तप किया। – साभार : शासन समुद्र –

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

कालूयशोविलास में
तत्त्व निरूपण

१. आठ कर्म– जैन अध्यात्म-मीमांसा में आठ कर्म प्रतिपादित हैं। उन्हें क्षीण कर मनुष्य परमात्मा बनता है।

२. अष्टम गुणस्थान– जैन धर्म के अनुसार मोक्ष के चौदह सौपान हैं। पारिभाषिक शब्दावली में उन्हें जीवस्थान और गुणस्थान कहा जाता है। बीच में एक दुराहा आता है। वह है आठवां गुणस्थान। यहां से एक मार्ग उपशम श्रेणी का तथा दूसरा मार्ग क्षपक श्रेणी का निकलता है।

उपशम श्रेणी के पथ पर चलने वाला साधक अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं हो सकता, उसे लौटना पड़ता है। क्षपक श्रेणी के मार्ग पर चलने वाला साधक निश्चित रूप से अपने लक्ष्य को प्राप्त हो जाता है।

३. आठ पृथ्वियां – जैन विश्व मिमासां (कोस्मोलोजी) के अनुसार आठ पृथ्वियां हैं–

१. रत्नप्रभा २. शर्कराप्रभा ३. बालुकाप्रभा
४. पंकप्रभा ५. धूमप्रभा ६. तमःप्रभा
७. तमस्तमःप्रभा ८. ईषत्प्राग्भारा।

४. आत्मा के आठ गुण– १. केवल ज्ञान २. केवल दर्शन ३. असंवेदन ४. आत्मरमण ५. अटल अवगाहन ६. अमूर्ति ७. अगुरुलघुत्व ८. निरन्तरायता।

५. आठ प्रवचनमाताएं– पांच समितियां, तीच गुप्तियां।

६. आठ मदस्थान– जाति, कुल, बल, रूप, तपस्या, लाभ, श्रुत, ऐश्वर्य।

७. आठ सिद्धियां– लघिमा, वशिता, ईशित्व, प्राकाम्य, महिमा, अणिमा, कामावसायित्व, प्राप्ति।

८. आठ प्रातिहार्य– १. अशोकवृक्ष २. सुरपुष्पवृष्टि ३. दिव्यध्वनि ४. देवदुन्दुभि, ५. स्फटिक सिंहासन, ६. धर्मचक्र, ७. छत्र, ८. चामर।

'प्रातिहार्य' शब्द का एक अर्थ है जादुई या चामत्कारिक। अर्थात् तीर्थकरों के वे अतिशय जो विलक्षण होते हैं, चमत्कार की तरह प्रतीत होते हैं। प्रातिहार्य का दूसरा अर्थ यह किया जाता है-प्रतिहार-द्वारपाल। द्वारपाल की तरह सेवा में जागरूक रहने वाले देवों द्वारा कृत तीर्थकरों के अतिशय।

९. आठ रूचक प्रदेश– जैन भूगोल-मीमांसा के अनुसार चौदह रज्ज्वात्मक लोक के असंख्य प्रतरों में सर्वक्षुल्लक प्रतर सुमेरू पर्वत के मध्य में होते हैं। उनमें चार ऊपर और चार नीचे गोस्तनाकार में आठ प्रदेश होते हैं। वे रूचक प्रदेश कहलाते हैं। लोकाकाश की भांति आत्मा के भी आठ रूचक प्रदेश होते हैं।

३. अनेकान्तवाद और स्याद्वाद

भगवान महावीर की स्तुति करते हुए रचनाकार ने उनके एक सिद्धान्त अनेकान्तवाद का संक्षिप्त वर्णन किया है–

स्वंगी सत-भंगी सुखद सत-मत-संगी हेत।
व्यंगी एकांगी कृते झंगी सो दुःख देत ।।
इतर दर्शणी कर्षणी नय-वणिज्य-अनभिज्ञ ।
विज्ञ वणिग् जिनदर्शणी नय दुर्नय विपणिज्ञ।।
वस्तु अंश-ग्राही विशद अंशेतर-सापेक्ष।
नय-नयज्ञ-निर्दिष्ट है नयाभास-निरपेक्ष ।।

(का. २/उल्लास-प्रवेश ३-५)

अनेकान्तवाद एक सिद्धान्त है। स्याद्वाद उसकी प्रतिपादन की पद्धति है। स्वाद्वाद की सप्तभंगी सुप्रसिद्ध है। प्रमाण और नय ये अनेकान्त को दो प्रतिपादन-शैलियां हैं। दुर्नय अनेकान्त का विरोधी मार्ग है। प्रमाण की व्याख्या पद्धति में वस्तु का समग्र रूप प्रतिपाद्य बनता है, जबकि नय की व्याख्या-पद्धति में अन्य अंशों का खण्डन न करने वाला वस्तु का एक अंश ही प्रतिपाद्य बनता है। दुर्नय एकान्त मार्ग है।

उदाहरण स्वरूप–

स्यादयं घटः	कथंचित् यह घड़ा है	- प्रमाण-वाक्य
घटोयम्	यह घडा है	- नय वाक्य
घट एवायम्	यह घड़ा है ही	- दुर्नय वाक्य

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

मार्च 2026
सप्ताह के विशेष दिन

23 मार्च
भगवान अजितनाथ निर्वाण, भगवान संभवनाथ निर्वाण, भगवान अनंतनाथ निर्वाण कल्याणक

27 मार्च
भगवान सुमतिनाथ निर्वाण कल्याणक

29 मार्च
भगवान सुमतिनाथ केवलज्ञान कल्याणक

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विविध आयोजन

जयपुर

भिक्षु साधना केंद्र श्याम नगर में महिला दिवस पर मुनि तत्व रुचि जी 'तरुण' के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल सी-स्कीम द्वारा 'ग्रहलक्ष्मी स्वाभिमान अभियान' कार्यक्रम रखा गया। जिसमें भामाशाह समाज सेविका, मुकुलिका जी बैद बतौर मुख्य अतिथि व N.G.O. की अनेक संस्थाओं से प्रतिनिधि बहिनें मेहमान थीं। कार्यक्रम में दीक्षार्थी परिवार की महादानी बहिनों तथा महिला उत्थान के लिए कार्यरत समाज सेवी बहिनों को दुपट्टा पहनाकर व मोमेंटो भेंट कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल की अध्यक्षा कनक आंचलिया ने की। उन्होंने मंडल की गतिविधियों की जानकारी दी व समागत अतिथियों और बहिनों का स्वागत भी किया। सरिता डागा (पूर्व अध्यक्षा अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल), सहित सेकडो बहिनें उपस्थित थीं।

मदुरै

गृहणियों के सम्मान और गरिमा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल मदुरै द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 'गृह लक्ष्मी स्वाभिमान अभियान' और एक 'एनजीओ मीट' (NGO Meet) का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 30 से अधिक एनजीओ (NGOs) और विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रेरणा गीत के साथ हुई, जिसके बाद अध्यक्षा दीपिका फुलफगर ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण एक संवादात्मक पैनल चर्चा रही, जिसमें महिलाओं को सामाजिक अपेक्षाओं से ऊपर उठकर अपनी आंतरिक क्षमता को पहचानने और निरंतर कौशल विकास (upskilling) के लिए प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री मधु पारख द्वारा किया। उपाध्यक्ष सुनीता कोठारी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

जसोल

अखिल भारतीय तेरापन्थ महिला मंडल व तेरापन्थ महिला मंडल जसोल के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में 'गृहलक्ष्मी स्वाभिमान अभियान व प्रेरणा सम्मान समारोह का आयोजन स्थानीय पुराणा ओसवाल भवन में हुआ। कोमल चौपड़ा ने बताया कि कार्यक्रम में बालोतरा नगर परिषद पूर्व चेयरमैन सुमित्रा देवी जैन, विशेष आमंत्रित सदस्य सारिका बागरेचा सहित पदाधिकारी के आतिथ्य में मौजूद थे। इस अवसर पर महिला मंडल अध्यक्ष ममता मेहता ने कहा कि आज का दिन आर्थिक,सामाजिक, सांस्कृतिक, खेल सहित हर क्षेत्र में महिलाओं की उपलब्धियों से भरा हुआ है। मंत्री जयश्री सालेचा ने कहा कि आधुनिक दौर में महिला एक पूर्ण चक्र है। उसके भीतर सृजन, पौषण और परिवर्तन की असीम शक्ति और भी प्रबल तब हो जाती है जब एक ।महिला घर की दहलीज से बाहर आकार खुद की कामकाजी महिलाओं के कतार में खड़ी करती है। वास्तव में कामकाजी महिलाएं , महिला सशक्तिकरण की पर्यायवाची और पूरक है। इस वर्ष का 'प्रेरणा सम्मान' मोहिनी देवी संखलेचा व अणसी देवी ढेलडिया को दिया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन कोमल चौपड़ा ने किया।

हैदराबाद

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के दिशा निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया । तत्पश्चात अध्यक्ष नमित सिंघी ने आगंतुक सभी बहनों का स्वागत किया। प्रथम चरण प्रेरणा सम्मान में उन माताओं,दादी व नानी को सम्मानित किया गया जिन्होंने अपने बच्चों में आध्यात्म के संस्कारों का बीजारोपण किया। सम्मानित होने वाली माताएं थी- सज्जन देवी चोरडिया, गट्टूदेवी (सुमन देवी) दुधोडिया, कमला देवी संकलेचा, जीवनी देवी, सुनीता आंचलिया। एक पैनल डिस्कशन में इस विषय पर चर्चा परिचर्चा हुई कि कैसे एक गृहणी के स्वाभिमान के लिए प्रशासन नयी योजनाएं लाए ,समाज व परिवार की सोच बदलें। तेरापंथ महिला मंडल के द्वारा सभी संस्थाओं को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में अध्यक्ष नमिता सिंघी व मंत्री निशा सेठिया आदि का विशेष श्रम रहा।

मध्य कोलकाता

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में मध्य कोलकाता महिला मंडल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 'गृहलक्ष्मी स्वाभिमान अभियान – महिला सशक्तिकरण' कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सुचिस्मिता मिश्रा (डिप्टी कमिश्नर) की गरिमामयी उपस्थिति रही। मध्य कोलकाता महिला मंडल की अध्यक्ष सपना बिरमेचा ने सभी अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। आयोजित पैनल डिस्कशन का नेतृत्व करते हुए अध्यक्ष विभिन्न एनजीओ प्रतिनिधियों के साथ महिला सशक्तिकरण विषय पर सार्थक चर्चा की। इस चर्चा में लगभग 10 एनजीओ 20 प्रतिनिधियों ने भाग लिया और अपने विचार साझा किए। इस अवसर पर सभी विशिष्ट अतिथियों एवं एनजीओ प्रतिनिधियों का पचरंगी पट्टी ओढ़ाकर सम्मान किया गया तथा उन्हें प्रमाण पत्र (सर्टिफिकेट) भी प्रदान किए गए। चीफ गेस्ट सुचिस्मिता मिश्रा ने अपना प्रेरणादायक वक्तव्य दिया। Taaza टीवी स्पीकर शर्मिष्ठा बाग़ ने महिला की शक्ति नौ रूपों का मार्मिक वर्णन किया। कार्यक्रम का सफल संचालन मंत्री सुनीता बैद ने किया तथा संगीता लुनिया ने आभार व्यक्त किया।

विलेपार्ले, मुंबई

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार विलेपार्ले महिला मंडल द्वारा महिला दिवस के उपलक्ष में साध्वी राकेश कुमारी जी आदि ठाणा ४ कि सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। महिला मंडल अध्यक्ष कुसुम कोठारी ने सभी का स्वागत किया। इस कार्यक्रम में दो एन जी ओ के कार्यकर्ता भी शामिल हुए। साध्वी राकेश कुमारी जी ने अपने मंगल उद्बोधन में नारी सशक्तिकरण के बारे में बताया। उन्होंने कहा नारी में ही यह गुण है जो समता वात्सल्य ममता के साथ न केवल अपने परिवार को अपितु पूरे समाज को नए आयाम पर लेकर जा सकती है। रेखा कोठारी ने सभी का आभार ज्ञापन किया ।कार्यक्रम का कुशल संचालन अनीता सिंघवी ने किया। बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही।

विजयनगर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में गृह लक्ष्मी स्वाभिमान अभियान के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर द्वारा दिनांक 7 मार्च 2026, शनिवार को विजयनगर स्थित अनमोल रेजीडेंसी में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। शुभारंभ मंडल की बहिनों ने प्रेरणा गीत से किया। अध्यक्ष महिमा पटावरी ने प्रेरणा सम्मान से सम्मानित तीन परिवार एवं ९ एनजीओ से समागत सभी का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का उद्देश्य बताया और आगामी कार्यक्रम श्री उत्सव के लिए सभी को अवगत करवाया।मुख्य वक्ता,अतिथि अखिल भारतीय महिला मंडल की पूर्व महा मंत्री वीणा बैद ने भक्ताम्बर के पद्य द्वारा स्त्री के महत्व को बताया और नारी के हर रूप को पारिवारिक,सामाजिक,राष्ट्रीय एवं सरकारी स्तर पर प्रस्तुत करते हुए कहा नारी के हर रूप में जैनत्व का गुण बना रहे साथ ही ९ एनजीओ जिसमे केयर केयर, जय जैन गीत मंडल,लब्धि छाया सेवा ग्रुप,लायंस क्लब,सोजत जैन महिला मंडल,श्री जैन वर्धमान स्थानक महिला मंडल,भारतीय जैन संगठन,बी जी एस मंडल,श्री जैन बहु मंडल के साथ विचार विमर्श करते हुए लायंस क्लब संस्था ने कहा कि हमारी संस्था हर नया आयाम जिसमें बुजुर्ग,युवती और हर आयु,वर्ग की महिला के उत्थान के लिए नए कार्य कर रहे हैं वही बहू मंडल संस्था जिसमें 40 की उम्र की युवती बहिनें है जो रोज़ प्रतिक्रमण के साथ महिला स्वाभिमान हेतु प्रयासरत है वही एक और संस्था से मायनॉरिटी पर भी सरस चर्चा हुई और महिला समाज से जुड़ी हर संस्था ने अपने विचार रखे जिस से कार्यक्रम को सफल सार्थकता मिली। विशेष अतिथि एडवोकेट स्वर्ण माला जी पोकरणा ने विचार व्यक्त किए, मंत्री सरिता छाजेड़ ने प्रेरणा सम्मान से सम्मानित काव्य मुनि की माता अनिशा बाबेल, पूर्वाध्यक्ष प्रेम भंसाली ने गुरुदेव तुलसी एवं साध्वी प्रमुखा कनक प्रभा जी को वंदन करते हुए कहा आज महिला का यह रूप उन्ही का योगदान है। अखिल भारतीय युवक परिषद अध्यक्ष विकास बांठिया एवं मंत्री योगेश पोरवाल उपस्थित रहे एवं विचार व्यक्त किए। संचालन उपाध्यक्ष सुमित्रा बरडिया और आभार प्रचार प्रसार मंत्री बबीता दस्साणी ने किया।

राउरकेला

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि ममता गौतम (Executive Director – CJS, District Governor Inspector – Lions Club International District) रहीं तथा विशिष्ट अतिथि मेघा अग्रवाल (अध्यक्ष – अखिल भारतीय अग्रवाल महिला सम्मेलन) ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री नीतू कोठारी एवं सभी अतिथियों का स्वागत तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा संगीता दुगड़ द्वारा किया गया ।कार्यक्रम का सुंदर संयोजन पूजा दुग्गड़ एवं प्रियंका कोचर द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान एक सुंदर नाट्य प्रस्तुति दी गई, जिसमें नारी के अनेक रूपों का सजीव चित्रण किया गया। साथ ही सभी एनजीओ प्रतिनिधियों ने अपने-अपने संस्थानों के कार्यों और गतिविधियों की जानकारी साझा की। इस अवसर पर सरोज गोलछा ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि उन्होंने घर से ही गृह उद्योग के रूप में भोजन बनाने का कार्य प्रारंभ किया और आज उसमें उन्हें अपार आनंद और संतोष प्राप्त हो रहा है।कार्यक्रम में बहनों के लिए रोचक गतिविधियाँ और ओपन माइक भी आयोजित किया गया, जिसमें सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अंत में मोनिका बोथरा द्वारा सभी अतिथियों एवं उपस्थित बहनों के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

हुबली

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि आलोक कुमार जी द्वारा नवकार मंत्र से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने 'प्रेरणागीत के संगान से' मंगलाचरण प्रस्तुत किया। अपने उद्बोधन में मुनि आलोक कुमार जी ने कहा कि महिलाओं को संस्कारों के साथ आधुनिकता को अपनाना चाहिए, परंतु अपनी मौलिकता और मूल्यों को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। मुनि हिम कुमार जी ने कहा कि महिला अनेक रूपों में जानी और पहचानी जाती है। दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी के रूपों से महिला अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर सकती है। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि हुबली-धारवाड़ महानगर निगम के वार्ड नं. 56 की पार्षद चंद्रिका वेंकटेश मिस्त्री थीं तथा मुख्य वक्ता के रूप में एसडीएम कॉलेज, धारवाड़ की प्रोफेसर डॉ. महिमा दंड उपस्थित रहीं। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा भाग्यवंती बागरेचा ने अतिथियों का स्वागत किया। प्रेरणा सम्मान पत्र का वाचन प्रचार-प्रसार मंत्री दिव्या बोहरा द्वारा किया गया। तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री कंचन चोपड़ा ने 'सामाजिक स्तर पर महिलाओं की पहचान' विषय पर अपनी प्रस्तुति दी। सिवांची महिला मंडल की मंत्री सुमन बाफना ने भी अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने महिला दिवस की शुभकामनाएं दीं, कार्यक्रम का कुशल संचालन तेरापंथ महिला मंडल की सहमंत्री अंजली कोठारी ने किया तथा अंत में सहमंत्री ममता बागरेचा ने आभार व्यक्त किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विविध आयोजन

टिटिलागढ़

नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई अध्यक्ष भावना जैन ने नारी शक्ति का स्वागत करते हुए कहा कि नारी शक्तिमान बनती है तो राष्ट्र मजबूत होता है। आज के हमारे कार्यक्रम की मुख्य अतिथि नगर पालिका अध्यक्ष ममता जैन को दुपट्टा उड़ा कर एवं हैंपर भेंट कर सम्मानित किया गया, उन्होंने कहा की नारी परिवार, समाज और राष्ट्र की आधार होती है जहां नारी मां के रूप में प्यार देती है ,बहन के रूप में स्नेह प्रदान करती है वहीं बेटी के रूप में घर में खुशियां लाती है। ज्ञानशाला संयोजिका कृष्णा जैन को भी सम्मानित किया गया ,उन्होंने ने अपने विचार रखते हुए कहा की भगवान ने तो नारी को लक्ष्मी ,सरस्वती, दुर्गा प्रेम की प्रतिमूर्ति राधा बना कर सर्वशक्तिमान बनाया था। पर नारी कमजोर कैसे हो गई आज यह हमें आत्म निरीक्षण करने की आवश्यकता है। मंडल की और से जिन माता की कोख से बैरागी बहनों का जन्म हुआ उन माताओं को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया ।सम्मानित करके हमें अत्यधिक प्रसन्नता एवं गौरव की अनुभूति हुई वहीं साध्वी भव्यश्री जी की माता जी के सुंदर विचार भी जानने को मिले की व्यवहार, आहार और विचार तीनों सुंदर है तो जीवन ही सुंदर है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर मारवाड़ी महिला समिति, अग्रवाल सभा, प्रगति शाखा, सृजन शाखा ,प्रकृति रक्षा फाउंडेशन, UPMS की अध्यक्षाओं को दुपट्टा उढाकर एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। आज के कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री पूजा जैन एवं उपाध्यक्ष दीपिका जैन ने किया।

गोरेगांव, मुंबई

कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र के उच्चारण से किया गया मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। स्वागत व्यक्तव्य गोरेगांव महिला मंडल अध्यक्ष डिम्पल हिरण द्वारा किया गया, उन्होंने गोरेगांव में महिला हित के लिए कार्यरत NGO जिसमें VNNO, महावीर इंटरनेशनल वीरा, सामाजिक विकास केंद्र एवं श्री साईं लीला फाउंडेशन चारों का स्वागत एवं अभिनंदन किया एवं साथ ही गोरेगांव के 2 दीक्षार्थी परिवार राठौड़ एवं भंसाली परिवार का भी स्वागत किया जहां से 2 साध्वी श्री जी दीक्षित हुए थे। महिलाओं की पढ़ाई से लेकर रोजगार एवं शादी कराने का काम भी ये संस्थाएं करती है। प्रेरणा सम्मान में गोरेगांव के राठौड़ परिवार में से तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित साध्वी लावण्यप्रभा जी के माता स्वरूप भाभी का सम्मान किया गया। भंसाली परिवार से तेरापंथ में दीक्षित साध्वी भव्य यशा की माता मंजू देवी भंसाली का सम्मान किया गया। अतिथि में भाजपा के महामंत्री:भाजपा,उत्तर भारतीय मोर्चा रश्मि उपाध्याय की विशेष उपस्थिति रही। उन्होंने सभी महिलाओं को प्रोत्साहित किया एवं कुछ ना कुछ करते रहो अपने खाली समय का सदुपयोग करो ये कहा। वो खुद एक NGO चलाती है। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रचार मंत्री ममता जी चिप्पड़ द्वारा किया गया।

पर्वत पटिया

नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ व नवयुवती बहिनों द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया गया तिलक लगाकर सभी अतिथियों का स्वागत किया गया मंडल की अध्यक्ष सुमन बैद ने अपने वक्तव्य में कहा की नारी हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही है घर परिवार को संभालते हुए सामाजिक, राजनीतिक या शिक्षा के क्षेत्र सभी में आगे बढ़ रही है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. मन्नू आर जैन (government officer, microbiology smmimer hospital head of department) ने कहा महिला के अंदर एक अद्भुत शक्ति है उसे पहचाने और आगे बढ़ने के लिए अगर संकल्प मजबूत हो तो हर रास्ता आसान हो जाता है उन्होंने पर्वत पाटिया महिला मंडल को बहुत-बहुत साधुवाद दिया ऐसे कार्यक्रम आयोजन करने के लिए। प्रेरणा सम्मान पत्र का वाचन संगठन मंत्री कृष्णा पुगलिया ने किया साध्वी विदित प्रभा जी व मुमुक्षु रुचिका बाई की संसारपक्षी माता कंचन मेहता को प्रेरणा सम्मान प्रदान किया गया। महिला मंडल मंत्री मधु झाबक ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का सफल व सुंदर संचालन कार्यकारिणी सदस्य चेष्टा कदमालिया व सुनीता पारख ने किया।

पृष्ठ 1 का शेष

भूल का निवेदन...

सारी बात गुरु के सामने स्पष्टता के साथ खोलकर रख देनी चाहिए। विशेषकर जीवन के अंतिम समय या संथारे से पूर्व व्यक्ति को अपने जीवन भर के ज्ञात अथवा अज्ञात दोषों की किसी बहुश्रुत या गुरु के समक्ष समग्र रूप से आलोचना कर लेनी चाहिए, जिससे आत्मा पूर्णतः शुद्ध हो सके। तत्पश्चात् गुरुदेव के इंगितानुसार साध्वी मुदितयशाजी एवं साध्वी श्रुतयशाजी ने 'शुक्लपक्षी व कृष्णपक्षी' तथा 'परीत-अपरीत संसारी' विषय पर संयुक्त रूप से प्रस्तुति दी। डॉ. समणी शशिप्रज्ञाजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आठ चातुर्मासों की सुदीर्घ सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया।

'वीतराग कल्प' मघवागणी...

मघवागणी तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम संस्कृत विद्वान भी माने जाते हैं। उनका युवाचार्य काल अधिक और आचार्य काल कम रहा, परन्तु उनका जीवन और उनकी साधना हमें निरंतर प्रेरणा देती है।

अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस के संदर्भ में परम पूज्य गुरुदेव ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि हमारे धर्मसंघ में गुरुदेव तुलसी के विशेष अवदान से साध्वी समाज, समणी समुदाय का बहुत विकास हुआ है। तेरापंथ महिला मंडल का अवदान महिला जाति के लिए उपकार है। महिलाएं आध्यात्मिक व धार्मिक हर क्षेत्र में अपना विकास करती रहे, यह मंगल कामना है।

मंगल प्रवचन के उपरांत आचार्य प्रवर की सन्निधि में शासन श्री साध्वी विद्यावती जी (प्रथम) की स्मृति सभा का आयोजन हुआ। गुरुदेव ने साध्वी श्री का संक्षिप्त परिचय प्रदान करते हुए कहा कि साध्वी विद्यावती जी ने वि.सं. 2008 में गुरुदेव तुलसी के मुखारविंद से दीक्षा ग्रहण की थी। उन्होंने लगभग 48 वर्षों तक साध्वी केसर जी के साथ रहकर ज्ञानार्जन और सेवा के उत्कृष्ट कार्य किए। वे अनेक आगमों को कंठस्थ करने वाली, शिल्पकला में निपुण और डाक्टरी सेवा में भी दक्ष साध्वी थी। गत 3 मार्च 2026 को सादुलपुर (राजगढ़) में उनका देवलोकगमन हो गया। उनकी आत्मा के ऊर्ध्वारोहण के लिए मंगल कामना। चतुर्विध धर्म संघ ने चार लोगस्स का ध्यान किया।

तत्पश्चात् मुख्य मुनि श्री महावीर कुमारजी, साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। सादुलपुर के श्रावक समाज एवं साध्वीश्रीजी के संसारपक्षीय ज्ञातिजनों ने गीत और विचारों के माध्यम से अपनी भावांजलि दी।

बोलती किताब

जीवन की सार्थक दिशाएं

संसार का अस्तित्व स्वयं समस्याओं की उपस्थिति का प्रमाण है। जहाँ जीवन है, वहाँ प्रश्न और चुनौतियाँ स्वाभाविक हैं। आश्चर्य यह है कि समाधानों की उपलब्धता होने के बाद भी समस्याएँ समाप्त नहीं होतीं। मानो 'पानी में मीन पियासी' की लोक-कथा जीवन-परिस्थितियों का दर्पण बनकर हमारे सामने खड़ी हो। विचारों और व्यवहार–इन दोनों स्तरों पर उत्पन्न होने वाली कठिनाइयाँ उसी समय दूर हो सकती हैं, जब समाधान भी इन्हीं दो स्तरों पर खोजा जाए।

वर्तमान समय की अनेक समस्याओं की जड़ वैचारिक आग्रहों में निहित है। जाति, भाषा, सम्प्रदाय और अलगाववाद जैसे संकट हमारे सामूहिक मानस की अनम्य सोच से ही उपजे हैं। भगवान महावीर के अनेकांतवाद में स्थित विचार-धोवन की प्रक्रिया आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, क्योंकि यह हमें आग्रहों से मुक्त होकर सत्य के बहुपक्षीय स्वरूप को देखने की दृष्टि प्रदान करती है। जब तक मनुष्य अपना वैचारिक अहं नहीं छोड़ता, तब तक पीड़ा और संघर्ष उसके जीवन का अभिन्न-संघी बने रहेंगे।

किंतु मनुष्य केवल विचारों से नहीं चलता। व्यवहार के धरातल पर चरित्र और मूल्य ही समस्याओं का वास्तविक समाधान प्रस्तुत करते हैं। आज राष्ट्रीय स्तर पर चरित्र-संकट गहरा रहा है। जनतांत्रिक व्यवस्था और चुनाव पद्धति पर अविश्वास, पारस्परिक अविश्वास और मूल्यों की उपेक्षा ने अनेक व्यावहारिक संकटों को जन्म दिया है। ऐसे में संयम और अहिंसा ही वे दो आधारशिलाएँ हैं, जिनसे मानव समाज पुनः विश्वास और शुचिता की राह पकड़ सकता है।

इन्हीं समकालीन चुनौतियों पर विवेचन और समाधान प्रस्तुत करने के उद्देश्य से यह साहित्य तैयार किया गया है। समस्याओं के अनेक कोण होते हैं और समाधानों के भी कई मार्ग। बिखरे विचारों को तटबंधों की तरह संकलित कर लिया जाए तो वे दिशाएँ दिखाने वाला साहित्य बन जाते हैं। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा संपादित 'जीवन की सार्थक दिशाएँ' इसी प्रक्रिया का सार्थक परिणाम है। यदि यह रचना कुछ पाठकों के जीवन में दिशा-प्रेरणा बन सके, तो यह संकलन अपने उद्देश्य को पूर्ण करेगा।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

होली के रंग आध्यात्मिकता के संग

जयपुर।

भिक्षु साधना केन्द्र श्याम नगर में होली पर्व के संदर्भ में आयोजित विशेष प्रवचन देते हुए कहा संदेह की होली जलाने और श्रद्धा के फूल खिलाने का पर्व है - होली।

उन्होंने होली की घटना का उल्लेख करते हुए कहा कि होली एक प्रकार से बीते हुए कल के खिलाफ बगावत है। आज मन मुटावों, बुरे विचारों और व्यवहारों को भुलाने का एक स्वर्णिम अवसर है। होली अशुभ भावों को जलाने का और शुभ भावों के रंग में रंगने-रंगाने का सुंदर मौका है। मुनि श्री जी ने आगे कहा - सत्य को परेशान तो किया जा सकता है, परंतु परास्त नहीं कर सकते।

अंत में जीत हमेशा सच्चाई और अच्छाई की ही होती है। मुनि संभव कुमार जी ने कहा - होली के अवसर पर ऋतु बदलती है। बदलाव जीवन में भी आना चाहिए। तनाव मुक्त और हल्का होने का पर्व है होली। इस अवसर पर तेरापंथ धर्म संघ की आठवीं साध्वीप्रमुखा शासन माता साध्वी श्री कनकप्रभाजी की पांचवीं पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धा से याद कर भावांजलि अर्पित की। मौके पर श्रावक संदीप भंडारी ने गीत से उन्हें श्रद्धांजली अर्पित की।

निष्ठुरता से बचने का प्रयास रहना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
04 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में योगक्षेम वर्ष के कार्यक्रम गतिमान हैं। आज के कार्यक्रम का शुभारंभ पूज्य गुरुदेव के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। साध्वी वृंद द्वारा प्रज्ञा गीत का संगान किया गया। तदुपरान्त महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत् वाङ्मय के आधार पर अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि शास्त्र में कहा गया है - 'निष्ठुरता से बचें।' हमारे भीतर कषाय का जगत है और क्रोध, मान, माया, लोभ विद्यमान हैं। मोह का सत्ता रूप ग्यारहवें गुणस्थान तक रहता है। ग्यारहवें गुणस्थान में मोहकर्म का बिल्कुल उदय नहीं होता परन्तु सत्ता रहती है। जो साधक उपशम श्रेणी

से आगे बढ़ता है वह मोह को उपशांत करता हुआ आगे बढ़ता है और ग्यारहवें गुणस्थान में पूर्णतया उपशांत मोह की स्थिति बन जाती है। आठवें गुणस्थान से दो मार्ग निकलते हैं- एक उपशम श्रेणी का मार्ग और दूसरा क्षपक श्रेणी का मार्ग। जो साधक उपशम श्रेणी का मार्ग स्वीकार करता है वह अपने कषायों को उपशांत करता हुआ आगे बढ़ता है, क्षीण नहीं करता। ग्यारहवें स्थान में यदि साधक पहुंच गया तो उसे लौटना ही पडेगा क्योंकि ग्यारहवां गुणस्थान बंद गली के समान है, इसके आगे कोई मार्ग है ही नहीं, अर्थात् वह नीचे के गुणस्थानों में निश्चित रूप से आएगा। क्षपक श्रेणी का मार्ग स्वीकार करने वाला जीव अपने कषायों को क्षीण करता हुआ दसवें गुणस्थान के पश्चात् सीधे बारहवें गुणस्थान में पहुंचता है, ग्यारहवें गुणस्थान का स्पर्श ही नहीं करता। बारहवें गुणस्थान में मोह पूर्णतया क्षीण हो जाता है फिर तेरहवां व चौदहवां गुणस्थान और उसके पश्चात् मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। हमारी पारंपरिक मान्यता के अनुसार वर्तमान व्यवस्था में सातवें गुणस्थान से आगे नहीं बढ़ा जा सकता। छठे-सातवें गुणस्थान में कभी कषाय की उद्दीप्तता भी हो सकती है।

छठे गुणस्थान का नाम प्रमत्त संयत है अतः उसमें प्रमाद आश्रव होता ही है। साधु से कभी कभी अशुभ योग रूपी प्रमाद हो सकता है। प्रमाद वश साधु से जीव हिंसा हो सकती है, असत्य बात निकल सकती है और मूर्च्छा भी आ सकती है और साधुपन में दोष लग सकता है। शास्त्र में कहा गया है कि साधु को निष्ठुरता का कर्म नहीं करना चाहिए। चांडालिक-निष्ठुर कर्मों से बचने का प्रयास करना चाहिए। कभी आक्रोश हो जाए तो मन में झुंझलाहट आ जाने से मनोयोग अशुभ हो जाता है। कुछ बोल दिया तो वचन योग और क्रोध में कोई शारीरिक चेष्टा यदि कर दें तो काय योग भी अशुभ हो सकता है। अतः साधु को निष्ठुरता से बचना चाहिए। कोई बड़ा साधु उलाहना भी दे दे तो उसे विनम्रतापूर्वक सहन कर छोटे साधु को विनय भाव रखना चाहिए। बड़े साधु को भी अनावश्यक तेजी नहीं लानी चाहिए। शांतिपूर्वक सहन करने से कर्म निर्जरा का लाभ भी हो सकता है और स्वयं का उत्थान भी हो सकता है। विनयवान आदमी को ऊंची स्थितियां प्राप्त हो सकती है। अतः साधु को निष्ठुरता से बचना चाहिए। प्रवचन के उपरान्त पूज्य प्रवर ने चारित्रात्माओं को अपनी जिज्ञासाएं प्रस्तुत करने का अवसर दिया और प्रस्तुत की गई जिज्ञासाओं का समाधान प्रदान किया।

78वें अणुव्रत स्थापना दिवस पर विभिन्न आयोजन

हिंदमोटर

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निर्देशन में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में 78 वाँ अणुव्रत स्थापना दिवस अणुव्रत समिति हावड़ा, कोलकाता एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा हिंदमोटर द्वारा रिजेंट गंगा' के कम्युनिटि हॉल में समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर अणुविभा के प्रचार-प्रसार मंत्री पंकज दुधेड़िया भी विशेष रूप से उपस्थित थे। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- अणुव्रत आंदोलन संयम का मार्ग दिखाता है। अणुव्रत साधना का पथ है। अणुव्रत केवल आचार संहिता ही नहीं अपितु, पूरा जीवन दर्शन है। अणुव्रत जीवन जीने की कला है। । अणुव्रत एक नैतिक आंदोलन है। आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के जरिये गरीब की झोपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक पदयात्रा कर नैतिकता की अलख जगाई । अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से उन्होंने सामाजिक कुरिधियों व अंधविश्वासों पर प्रहार किया। अणुव्रत का अर्थ है-जीवन शुद्धि की न्यूनतम आचार-संहिता । अणुव्रत का मुख्य उद्देश्य है- साम्प्रदायिक सौहार्द, नैतिकता व भाईचारा का विकास । मुनि जिनेश कुमारजी ने आगे कहा आज अणुव्रत आंदोलन का 78 वाँ स्थापना दिवस है। अणुव्रत आंदोलन का शुभारंभ। मार्च 1948 को सरदारशहर में आचार्य श्री तुलसी के द्वारा हुआ ।

वर्तमान में अणुव्रत की प्रासंगिकता उपादेय है। अणुव्रत के नियम को जीवन में अपनाएँ। इसके नियमों का पालन किसी भी जाति, धर्म का व्यक्ति कर सकता है। विश्व को शांति के लिए अणुबम की नहीं अणुव्रत की आवश्यकता है। आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति, कोलकाता के अध्यक्ष नवीन दुगड़ व हिन्दमोटर सभा के मंत्री मनीष रांका ने दिया। संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

गुवाहाटी

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, गुवाहाटी द्वारा स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में अणुव्रत स्थापना दिवस एवं अणुव्रत काव्यधारा का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में अणुव्रत झंडारोहण के साथ अणुव्रत गीत का संगान हुआ। कार्यक्रम के द्वितीय चरण का शुभारंभ अणुव्रत आचार संहिता के वाचन से हुआ। समिति के अध्यक्ष संजय चौरड़िया ने अपने संबोधन में सभी का स्वागत - अभिनंदन करते हुए अणुव्रत दर्शन के विषय में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि 1 मार्च 1949 को सरदारशहर (राजस्थान) की धरती से युगद्रष्टा आचार्य श्री तुलसी ने एक महान आंदोलन का शंखनाद किया, जिसे हम 'अणुव्रत आंदोलन' के नाम से जानते हैं। समिति के परामर्शक कैलाश काबरा ने कहा कि अणुव्रत समिति से जुड़ने के पश्चात मेरे में काफी परिवर्तन आया है। मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित उद्योगपति, समाजसेवी एवं राजस्थान फाउंडेशन, असम के अध्यक्ष रतन शर्मा का परिचय स्मिता सुराणा ने दिया। उनका मोमेंटो, डायरी आदि से सम्मान किया गया। रतन शर्मा ने कहा कि आज का दिन संयम और चरित्र की भावना सिखाता है। अणुव्रत लेखक मंच के संयोजक सीए रतन अगरवाला की पुस्तक 'आत्मकथा - मेरी और आपकी' का उपस्थित अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया।

इचलकरंजी

78वा अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष में अणुव्रत समिति इचलकरंजी द्वारा सर्वप्रथम साई इंग्लिश स्कूल के विधार्थियों के साथ अणुव्रत रैली का आयोजन उत्साह रूप से किया गया। इस रैली मे अणुव्रत के संदेश की जानकारी पोस्टर के माध्यम से दी गयी। तेरापंथ सभा इचलकरंजी के अध्यक्ष अशोक बाफना ने अणुव्रत के अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी को याद करते हुए अपने व्यक्तव मे सारे विधार्थियों का स्वागत एवं उनके भविष्य के प्रति मंगलकामना प्रेषित की। अणुव्रत स्थापना दिवस के राष्ट्रीय संयोजक के सदस्य दिनेश छाजेड ने अणुव्रत के बारे मे संक्षिप्त जानकारी दी एवं हर प्रकार का व्यसन अपने जीवन मे कितना हानिकारक होता है यह सारे विद्यार्थियों को अपने शब्दों के माध्यम से समझाया। अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष सुरेंद्र छाजेड ने सारे विद्यार्थियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री संतोष भंसाली ने किया।

जसोल

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी एवं अणुव्रत समिति जसोल के सयुक्त तत्वावधान में 78 वां अणुव्रत स्थापना दिवस समारोह स्थानीय पुराणा ओसवाल भवन जसोल में मनाया गया। मंत्री सफरु खान ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापन्थ महिला मंडल जसोल की बहिनो द्वारा मंगलाचरण से हुआ। अणुव्रत आचार संहिता का वाचन तेरापन्थ सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी ने किया। स्वागत भाषण समिति अध्यक्ष महावीर के.सालेचा ने प्रस्तुत किया। तेरापन्थ महिला मंडल द्वारा सामूहिक गीतिका 'जिंदगी का सार सयंम साधना कर लो... की शानदार प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में जसराज बुरड़, महासभा से गौतमचन्द सालेचा, ज्ञानशाला प्रभारी डूंगरचन्द सालेचा आदि ने अणुव्रत के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान की। आभार ज्ञापन निवर्तमान अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन अणुव्रत मीडिया प्रभारी कान्तिलाल ढ़ेलडिया ने किया।

चेन्नई

अणुविभा के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, चेन्नई की आयोजना में 78वा अणुव्रत स्थापना दिवस साध्वी सोमयशाजी, साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में कोला सरस्वती विद्यालय में मनाया गया। नमस्कार महामंत्र समुच्चारण के साथ कार्यक्रम में साध्वी सोमयशाजी ने कहा कि भारतीय संस्कृती व्रत, त्याग प्रधान संस्कृती है। सामाजिक नियम जहां बाह्य जगत को प्रभावित करते है, वही आध्यात्मिक व्रत चेतना का उद्धारोहण करता है, भीतरी शक्ति का संचरण करता है। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम व्यक्ति के जीवन को सुधारते है, विकासोन्मुखी बनाते हैं। साध्वी उदितयशाजी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी विचारक से ज्यादा दृष्टा थे। समय की नब्ज को पहचान कर कार्य करने वाले थे। उसी के आधार पर समाज संरक्षण उपयोग के लिए, मानव में मानवता के प्राण प्रवाहन, प्रतिष्ठापन के लिए अणुव्रत आंदोलन का प्रर्वतन किया। शरीर आत्मा का आवरण है, उसी तरह 'व्रत आवरण है, जीवन का सुरक्षा अध्यक्षा श्रीमती सुभद्रा लुणावत ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। मंत्री कुशल बांठिया ने धन्यवाद ज्ञापन और उपाध्यक्ष स्वरुपचन्द दाँती ने कार्यक्रम का संचालन किया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

पाप का अर्थ

शब्द एक, अर्थ अनेक, वहां कुछ उलझनें पैदा होती हैं। आचार्य भिक्षु ने कहा– 'आचरण का परिणाम धर्म या पाप है।' पाप शब्द बहुत कड़वा है, तीखा है, सीधी चोट-सी करता है, इसलिए जरूरी है समझना कि आचार्य भिक्षु पाप किसे कहते थे। पाप का एक अर्थ होता है– दुष्ट, अधम। पाप का दूसरा अर्थ है– निन्दनीय। आचार्य भिक्षु द्वारा प्रयुक्त पाप का कोई तीसरा ही अर्थ है और वह है– अशुभ कर्म परमाणुओं का बंध।

किसी ने उनसे पूछा– 'भिखारी को दान देने में क्या होता है?

उन्होंने कहा– 'पाप होता है।'

वे यह कहना चाहते थे कि परिग्रह रखना भी पाप है और उसे किसी दूसरे को देना भी पाप है। परन्तु वे यह कहना भी नहीं चाहते थे कि परिग्रह रखना भी निन्दनीय है और उसे किसी दूसरे को देना भी निन्दनीय है। पाप कहने का अर्थ इतना ही है वह आध्यात्मिक आचरण नहीं है, वह सामाजिक व्यवहार है।

साप्ताहिक प्रेरणा

।।ॐ श्री महाश्रमण गुरुवे नमः।। की एक माला फेरे।

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

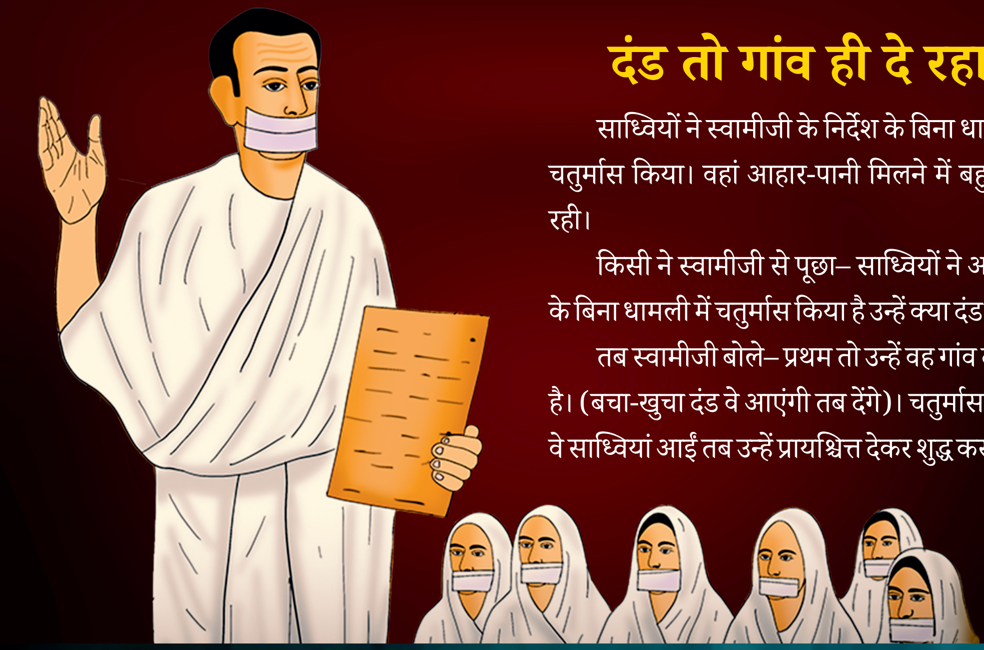

दंड तो गांव ही दे रहा है

साध्वियों ने स्वामीजी के निर्देश के बिना धामली गांव में चतुर्मास किया। वहां आहार-पानी मिलने में बहुत कठिनाई रही।

किसी ने स्वामीजी से पूछा– साध्वियों ने आपके निर्देश के बिना धामली में चतुर्मास किया है उन्हें क्या दंड?

तब स्वामीजी बोले– प्रथम तो उन्हें वह गांव दंड दे ही रहा है। (बचा-खुचा दंड वे आएंगी तब देंगे)। चतुर्मास के बाद जब वे साध्वियां आईं तब उन्हें प्रायश्चित्त देकर शुद्ध कर दिया।

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को

जैन जीवन शैली-3

इच्छा परिमाण और मनोनुशासनम

इस प्रक्रिया के छह अंग है।

1. सबसे पहला है– आहार में अनुशासन। आहार में अविवेक शरीर ही नहीं मन पर भी असर डालता है।
2. शरीर का अनुशासन।
3. इन्द्रिय का अनुशासन।
4. इच्छा का अनुशासन।
5. श्वास का अनुशासन।
6. मन का अनुशासन।

सम्यक् आजीविका

व्यावहारिक जीवन में आजीविका का बड़ा महत्त्व है।

1. स्वस्थ जीवन शैली में सम्यक् आजीविका आवश्यक है। व्यवसाय शुद्धि, प्रामाणिकता शराब, मांस, अंडा आदि के व्यापार का वर्जन।
2. तस्करी का वर्जन।
3. खाद्य पदार्थ में मिलावट का वर्जन।
4. शस्त्र के व्यवसाय का वर्जन।
5. जंगलों की कटाई का वर्जन।

क्या आप जानते हैं?

फिटकरी से शोधित किया हुआ पानी अचित्त माना जाए। उसे तपस्या में भी पीने में आपत्ति नहीं।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

भव्य भगवती दीक्षा समारोह का आयोजन

शिक्षा–परीक्षा–समीक्षा के बाद बन सकता है दीक्षा का योग : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
06 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, तीर्थंकर महावीर के प्रतिनिधि, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में आज जैन भगवती दीक्षा समारोह आयोजित हुआ, जिसमें तीन मुमुक्षुओं - प्रिया महनोत, रक्षा ओस्तवाल और प्रिशा गादिया ने संसार का मार्ग छोड़कर संन्यास और संयम का मार्ग स्वीकार किया। आज के समारोह की विशेष बात यह रही कि मात्र 10 वर्षीय बालिका प्रिशा गादिया ने इतनी अल्प आयु में दीक्षा अंगीकार की।

आज के कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीवृंद द्वारा प्रज्ञा गीत के संगान के साथ हुआ। दीक्षा संस्कार से पूर्व मुमुक्षु भावना नाहटा ने दीक्षार्थियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् पारमार्थिक शिक्षण संस्था के बजरंग जैन ने दीक्षार्थियों के परिजनों के आज्ञा पत्रों का वाचन किया। परिजनों ने आज्ञा पत्र पूज्य गुरुदेव के चरणों में सौंपे। तीनों दीक्षार्थियों ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तदुपरान्त परम पूज्य गुरुदेव ने भगवान महावीर, आचार्य भिक्षु और पूर्व आचार्यों का स्मरण कर आगम सूक्तों के वाचन के साथ तीनों मुमुक्षुओं को संयम जीवन प्रदान किया। साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभाजी ने नवदीक्षित साध्वियों का केश लुचन किया। केश लुंचन के पश्चात् नवदीक्षितों को साधु चर्या का अभिन्न अंग 'रजोहरण' प्रदान किया।

साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जो व्यक्ति आत्म विद्या के रहस्यों को जानने के लिए तत्पर होता है वह दीक्षा के मार्ग को स्वीकार करता है। उनका एक ही लक्ष्य होता है अपनी आत्मा का अभ्युदय करना, आत्मा का विकास करना। उन्होंने तीनों नवदीक्षितों के लिए मंगलकामना करते हुए कहा कि गुरुदेव के इंगितानुसार चल कर अपने जीवन के मार्ग को प्रशस्त करती रहे।

आचार्य प्रवर ने पावन संबोध प्रदान करते हुए फरमाया कि पहले शिक्षा होती है, फिर परीक्षा और फिर अन्त में समीक्षा के बाद दीक्षा का क्रम आता है। दीक्षा कोई सामान्य कार्य नहीं है, इसमें जीवन भर के लिए सर्व-सावद्य योग का त्याग किया जाता है और गुरु के अनुशासन में रहना होता है। आगम के अनुसार 'समय पर अध्ययन हो।' नवदीक्षित साध्वियों का स्वाध्याय निरंतर चलना चाहिए क्योंकि स्वाध्याय संयम की असली खुराक है।

स्वाध्याय के साथ ही उच्चारण शुद्धि का भी बहुत महत्त्व है। ज्ञान के संदर्भ में केवल सूत्र पाठ ही नहीं बल्कि अर्थ का भी अवबोध होना चाहिए ताकि आगम की बातें दिशा-निर्देशक बन सकें। इन सबके साथ मन में सेवा की प्रबल भावना रहनी चाहिए। अपनी सामर्थ्यनुसार बीमार, वृद्ध, और सेवा सापेक्ष चारित्रात्माओं की यथायोग्य सेवा करें। नवदीक्षितों को संभालना, उन्हें संस्कार देना और तैयार करना भी बहुत बड़ी आध्यात्मिक सेवा है।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पंकज कुमार डागा द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। अध्यक्ष : पवन मांडोत